नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 077
दि. 19.12.2025,
शुक्रवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : JIGNESHKUMAR PETHABHAI VAGHELA Regd. Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Centre, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad-382 424, Gujarat, India.

Phone : 76983 33307 (M) 84859 51747, 70963 33307 ● Email : navsarjansanskruti2016@gmail.com ● Email : navsarjansanskruti2016@yahoo.com ● Website : www.navsarjansanskruti.com

लोकसभा में 'जी राम जी' विधेयक पारित हंगामे के बीच सरकार-विपक्ष आमने-सामने

(जीएनएस)। नई दिल्ली। संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान गुरुवार को लोकसभा में जबरदस्त हंगामे और तीखी बहस के बीच विकसित भारत, गारंटी फॉर रोजगार एंड आजीविका मिशन (ग्रामीण) यानी 'वीबी-जी राम जी' विधेयक पारित कर दिया गया। विपक्ष के कड़े विरोध, नारेबाजी और संसदीय समिति को भेजने की मांग के बावजूद सरकार ने विधेयक को सदन की मंजूरी दिला दी। इस दौरान सदन का माहौल कई बार इतना तनावपूर्ण हो गया कि लोकसभा अध्यक्ष को बार-बार हस्तक्षेप करना पड़ा। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने स्पष्ट किया कि इस विधेयक पर सदन में आठ घंटे से अधिक समय तक विस्तृत चर्चा हो चुकी है और 99 सांसदों ने अपनी बात रखी है। उन्होंने विपक्ष की यह मांग खारिज कर दी कि विधेयक को दोबारा संसदीय समिति के पास भेजा जाए। इसके बाद जैसे ही ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान को चर्चा का जवाब देने के लिए बुलाया गया, विपक्षी सांसद अपनी सीटों से उठकर अध्यक्ष के आसन के पास आ गए और जोरदार नारेबाजी शुरू कर दी। कई सांसदों के हाथों में महात्मा गांधी की तस्वीरें थीं, कागज फाड़कर हवा में उछाले गए और कुछ सांसद लोकसभा महासचिव की मेज तक पहुंच गए, जिससे सदन की गरिमा पर सवाल खड़े हो गए।

अपने जवाब में शिवराज सिंह चौहान ने कांग्रेस और विपक्ष पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि जिन लोगों के हाथों में आज गांधी की तस्वीरें हैं, वही लोग वर्षों तक बापू के आदर्शों की उपेक्षा करते रहे हैं। शिवराज ने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने महात्मा गांधी के नाम का राजनीतिक इस्तेमाल किया, जबकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में मौजूदा सरकार गांधी के विचारों को जमीन पर उतारने का काम कर रही है। उन्होंने कहा कि विकसित गांवों के बिना विकसित भारत का सपना पूरा नहीं हो सकता और यही सोच इस नए विधेयक की आत्मा है। मनरेगा से महात्मा गांधी का नाम हटाए जाने के विपक्षी आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि किसी योजना का उद्देश्य अगर समय के साथ पूरा नहीं हो पा रहा है, तो उसे नए स्वरूप में आगे बढ़ाना सरकार की जिम्मेदारी होती है। उन्होंने याद दिलाया कि शुरुआत में इस योजना का नाम नरेगा था और 2009 के आम चुनावों से ठीक पहले कांग्रेस सरकार ने इसमें महात्मा गांधी का नाम जोड़ा था। उन्होंने आरोप लगाया कि यूपीए सरकार ने मनरेगा को पूरी क्षमता से लागू नहीं किया और इसमें बड़े पैमाने पर खामियां रहीं।

शिवराज सिंह चौहान ने आंकड़ों के जरिए मोदी सरकार के कार्यकाल की तुलना कांग्रेस शासन से की। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के समय जहां 1,660 करोड़ श्रम दिवस सृजित हुए, वहीं मोदी सरकार में यह संख्या बढ़कर 3,210 करोड़ तक पहुंच गई। महिलाओं की भागीदारी भी 48 प्रतिशत से बढ़कर 56.73 प्रतिशत हो गई है, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की मजबूत भूमिका को दर्शाती है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि मनरेगा में मजदूरी और सामग्री के अनुपात में भारी गड़बड़ियां हुईं और भ्रष्टाचार के कई मामले सामने आए।

प्रियंका गांधी वाड्रा के आरोपों पर पलटवार करते हुए शिवराज ने कहा कि कांग्रेस को गांधी परिवार के नामों से योजनाएं और संस्थान जोड़ने की पुरानी आदत रही है। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि नेहरू, इंदिरा और राजीव गांधी के नाम पर सैकड़ों योजनाएं और संस्थान बनाए गए, लेकिन जमीन पर उनके परिणाम सवालों के घेरे में रहे।

सदन की कार्यवाही स्थगित होने के बाद भाजपा मुख्यालय में आयोजित पत्रकार वार्ता में शिवराज सिंह चौहान ने विपक्ष के व्यवहार को "गुंडाराज जैसा" बताया। उन्होंने कहा कि कागज फाड़कर उछालना, आसन के पास पहुंचकर नारेबाजी करना और सदन की मर्यादा तोड़ना लोकतंत्र का अपमान है। उनके मुताबिक विपक्ष का यह आचरण न सिर्फ संसदीय परंपराओं को तार-तार करता है, बल्कि जनता के विश्वास को भी ठेस पहुंचाता है।

सरकार का कहना है कि 'वीबी-जी राम जी' विधेयक ग्रामीण भारत में रोजगार और आजीविका की नई गारंटी बनेगा, जबकि विपक्ष इसे मनरेगा को कमजोर करने की कोशिश बता रहा है। इसी टकराव के बीच यह विधेयक पारित होना संसद के मौजूदा सत्र की सबसे बड़ी और विवादास्पद घटनाओं में से एक बन गया है, जिसने राजनीतिक गलियारों में नई बहस छेड़ दी है।

पीएम आवास योजना में गड़बड़ियों की आशंका, नगर पालिका ने बलदेवी क्षेत्र में अचानक चलाया जांच अभियान

(जीएनएस)। सिलवासा। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत बने मकानों के दुरुपयोग की शिकायतों के बाद नगर पालिका प्रशासन ने बलदेवी क्षेत्र में बुधवार शाम अचानक सघन जांच अभियान चलाया। बिना पूर्व सूचना की गई इस कार्रवाई से इलाके में कुछ समय के लिए अफरा-तफरी का माहौल बन गया और लाभार्थियों में हलचल देखी गई। प्रशासनिक अमले के पहुंचते ही कई लोग अपने-अपने आवासों के बाहर नजर आए और जांच को लेकर चर्चाएं तेज हो गईं।

नगर पालिका अधिकारियों के अनुसार, पिछले कुछ समय से लगातार शिकायतें मिल रही थीं कि पीएम आवास योजना के अंतर्गत बनाए गए कुछ मकानों का उपयोग तय नियमों के विपरीत किया जा रहा है। आरोप थे कि कुछ लाभार्थियों ने इन आवासों को किराये पर दे दिया है, जबकि कुछ जगहों पर इन्हें अन्य उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। इन शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए प्रशासन ने मौके पर पहुंचकर भौतिक सत्यापन करने का फैसला लिया।

जांच के दौरान अधिकारियों ने आवंटित मकानों की स्थिति का बारीकी से निरीक्षण किया। टीम ने यह देखने की कोशिश की कि मकानों में वही लाभार्थी रह रहे हैं या नहीं, जिनके नाम पर आवंटन हुआ था। साथ ही, लाभार्थियों से संबंधित दस्तावेज भी मांगे गए, ताकि पात्रता, स्वामित्व और निवास से जुड़ी स्थिति स्पष्ट की जा सके। कुछ मामलों में दस्तावेज उपलब्ध न होने पर अधिकारियों ने संबंधित लोगों को जल्द रिकॉर्ड प्रस्तुत करने के निर्देश दिए।

सूत्रों के मुताबिक, बलदेवी क्षेत्र में पीएम आवासों को लेकर अनियमितताओं की चर्चाएं पहले से चल रही थीं। माना जा रहा है कि कुछ लोगों ने योजना का लाभ तो ले लिया, लेकिन बाद में नियमों का पालन नहीं किया। प्रशासन यह भी जांच कर रहा है कि कहीं किसी लाभार्थी के पास पहले से पक्का मकान तो नहीं है, क्योंकि योजना के तहत ऐसे व्यक्ति को आवास देने का प्रावधान नहीं है। नगर पालिका अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि प्रधानमंत्री आवास योजना का उद्देश्य जरूरतमंद और बेघर परिवारों को छत मुहैया कराना है। इस योजना के तहत आवंटित मकान केवल आवासीय उपयोग के लिए होते हैं। इन्हें किराये पर देना, बेच देना या किसी भी प्रकार की व्यावसायिक गतिविधि में इस्तेमाल करना नियमों के खिलाफ है। यदि जांच में किसी भी तरह का उल्लंघन सामने आता है, तो संबंधित लाभार्थी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

अधिकारियों ने यह भी संकेत दिए कि गंभीर अनियमितता पाए जाने पर मकान का आवंटन रद्द करने की प्रक्रिया शुरू की जा सकती है। नगर पालिका प्रशासन ने कहा कि जांच का उद्देश्य किसी को परेशान करना नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि सरकारी योजनाओं का लाभ सही और पात्र लोगों तक पहुंचे। प्रशासन ने यह भी स्पष्ट किया कि आने वाले दिनों में अन्य क्षेत्रों में भी इसी तरह के सत्यापन अभियान चलाए जा सकते हैं, ताकि पीएम आवास योजना में पारदर्शिता बनी रहे और दुरुपयोग पर रोक लगाई जा सके।

नफरती भाषण दिया तो खैर नहीं, कर्नाटक विधानसभा से 'हेट स्पीच और हेट क्राइम्स रोकथाम विधेयक, 2025' पारित

(जीएनएस)। बेंगलुरु। कर्नाटक विधानसभा ने गुरुवार को समाज में बढ़ती नफरत, वैमनस्य और हिंसक प्रवृत्तियों पर सख्त लगाम लगाने की दिशा में एक अहम कदम उठाते हुए 'हेट स्पीच और हेट क्राइम्स रोकथाम विधेयक, 2025' को पारित कर दिया। बेलगावी में हुई लंबी चर्चा के बाद यह विधेयक सदन की मंजूरी से कानून बनने की प्रक्रिया में आगे बढ़ गया। सरकार का कहना है कि यह कानून अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का दुरुपयोग कर समाज को बांटने वाली ताकतों पर नकेल कसने के लिए जरूरी था। विधेयक पर चर्चा के दौरान गृह मंत्री जी. परमेश्वर ने साफ शब्दों में कहा कि हेट स्पीच केवल शब्दों का खेल नहीं है, बल्कि इसके पीछे हिंसा, डर और सामाजिक विभाजन की गंभीर संभावना छिपी होती है। उन्होंने सदन को बताया कि हेट स्पीच का मतलब किसी व्यक्ति, समुदाय या संगठन—चाहे वह जीवित हो या दिवंगत—के खिलाफ नफरत फैलाने वाली बातों को कहना, लिखना, छापना या किसी भी माध्यम से फैलाना है, जिससे समाज में दुश्मनी, घृणा या वैमनस्य पैदा हो। उनके मुताबिक, जब ऐसी बातें जानबूझकर कही जाती हैं और लोगों को उकसाने का काम करती हैं, तो वे सीधे

तौर पर कानून-व्यवस्था के लिए खतरा बन जाती हैं। गृह मंत्री ने यह भी कहा कि हाल के वर्षों में ऐसे कई उदाहरण सामने आए हैं, जहां कुछ बयान या लेख न सिर्फ किसी समुदाय को अपमानित करते हैं, बल्कि खुले तौर पर हिंसा के लिए उकसाते हैं। उन्होंने अखबारों और अन्य माध्यमों का हवाला देते हुए कहा कि कई बार ऐसे वक्तव्य प्रकाशित हुए हैं, जिनमें किसी खास समुदाय के खिलाफ हिंसक कार्रवाई की बात कही गई या उन्हें नुकसान पहुंचाने का आह्वान किया गया। ऐसे मामलों को रोकने के लिए सरकार के पास स्पष्ट, मजबूत और प्रभावी कानून होना जरूरी है, ताकि समय रहते कार्रवाई की जा सके।

नए कानून के तहत हेट क्राइम करने वालों के लिए कड़ी सजा का प्रावधान किया गया है। विधेयक के अनुसार, अगर कोई व्यक्ति नफरती भाषण देता है या हेट क्राइम में शामिल पाया जाता है, तो उसे कम से कम एक साल और अधिकतम सात साल तक की जेल हो सकती है, साथ ही 50 हजार रुपये तक का जुर्माना भी लगाया जा सकेगा। सरकार का मानना है कि यह सजा इतनी कठोर है कि वह ऐसे अपराधों को हतोत्साहित करेगी और समाज में भय के बजाय जिम्मेदारी का माहौल बनाएगी।

विधेयक में बार-बार अपराध करने वालों के लिए और सख्त प्रावधान रखे गए हैं। अगर कोई व्यक्ति दोबारा हेट स्पीच या हेट क्राइम का दोषी पाया जाता है, तो उसे कम से कम दो साल की जेल और एक लाख रुपये तक का जुर्माना भुगतना पड़ सकता है। सरकार का तर्क है कि आदतन अपराधियों के प्रति नरमी समाज के लिए घातक हो सकती है, इसलिए उनके खिलाफ सख्त रुख अपनाना जरूरी है।

चर्चा के दौरान गृह मंत्री जी. परमेश्वर ने विधेयक में सजा से जुड़े एक अहम संशोधन का प्रस्ताव भी रखा। उन्होंने कहा कि पहले अधिकतम सजा 10 साल तक रखने का प्रस्ताव था, लेकिन कानूनी संतुलन और व्यावहारिकता को ध्यान में रखते हुए इसे घटाकर सात साल किया जाना उचित होगा। उनका कहना था कि सात साल की अधिकतम सजा भी पर्याप्त रूप से कठोर है और यह कानून के दायरे में रहते हुए प्रभावी परिणाम दे सकती है। विधानसभा ने इस संशोधन को स्वीकार करते हुए सर्वसम्मति से मंजूरी दे दी।

सरकार का दावा है कि यह कानून किसी समुदाय या विचारधारा को निशाना बनाने के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक सौहार्द, शांति और संविधान के मूल्यों की रक्षा के लिए लाया गया है। वहीं विपक्षी हलकों में इसे लेकर बहस भी जारी है कि इसका दुरुपयोग न हो और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर अनावश्यक अंकुश न लगे। इसके बावजूद कर्नाटक सरकार इसे सामाजिक एकता की दिशा में एक मजबूत संदेश मान रही है कि नफरत फैलाने वालों के लिए अब कानून सख्त होगा और उन्हें किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा।

मसाला बॉन्ड मामले में मुख्यमंत्री विजयन को बड़ी राहत, ईडी की कार्रवाई पर हाई कोर्ट की अस्थायी रोक

(जीएनएस)। कोच्चि। केरल इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट फंड बोर्ड (केआईआईएफबी) के मसाला बॉन्ड मामले में मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन को बड़ी कानूनी राहत मिली है। केरल हाई कोर्ट ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा मुख्यमंत्री को जारी किए गए कारण बताओ नोटिस के आधार पर किसी भी तरह की आगे की कार्रवाई पर तीन महीने की रोक लगा दी है। यह आदेश 18 दिसंबर को जस्टिस वी. जी. अरुण की एकल पीठ ने सुनाया। अदालत ने इसी मामले में पूर्व राज्य वित्त मंत्री थॉमस इसाक और मुख्यमंत्री के मुख्य प्रधान सचिव तथा केआईआईएफबी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी के. एम. अब्राहम को भी अंतरिम राहत प्रदान की है। हाई कोर्ट का यह फैसला मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन, थॉमस इसाक और के. एम. अब्राहम द्वारा दायर संयुक्त याचिका पर आया है। याचिका में प्रवर्तन निदेशालय की ओर से जारी कारण बताओ नोटिस को चुनौती दी गई थी, जिसमें मसाला बॉन्ड के जरिए जुटाई गई राशि के इस्तेमाल को लेकर सवाल उठाए गए थे। याचिकाकर्ताओं का तर्क था कि केआईआईएफबी द्वारा जुटाई गई यह राशि राज्य की बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए भूमि अधिग्रहण और अन्य विकास कार्यों में खर्च की गई है और यह पूरी प्रक्रिया भारतीय रिजर्व बैंक के नियमों और मौजूदा कानूनी ढांचे के अनुरूप है। अदालत ने सुनवाई के दौरान कहा कि जब केआईआईएफबी की याचिका पर पहले ही अंतरिम रोक लगाई जा चुकी है, तो उसी मामले से जुड़े मुख्यमंत्री, पूर्व वित्त मंत्री और मुख्य सचिव को भी समान राहत दिए जाने से इनकार नहीं किया जा सकता। कोर्ट ने माना कि सभी याचिकाकर्ताओं का मामला एक ही आधार और तथ्यों पर टिका हुआ है। इसके साथ ही अदालत ने प्रवर्तन निदेशालय से याचिका में उठाए गए सभी बिंदुओं पर विस्तृत जवाब दाखिल करने को कहा है।

हाई कोर्ट ने अपने आदेश में यह भी स्पष्ट किया कि भारतीय रिजर्व बैंक के एक्सटर्नल कमर्शियल बॉरोइंग फ्रेमवर्क, 2019 के तहत इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़ी परियोजनाओं के लिए मसाला बॉन्ड के जरिए धन जुटाने पर कोई रोक नहीं है। अदालत ने प्रथम दृष्टया यह टिप्पणी की कि इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं को 'रियल एस्टेट' की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता, इसलिए केवल इस आधार पर केआईआईएफबी के खिलाफ कार्रवाई करना उचित नहीं है। कोर्ट ने कहा कि जब तक मामले की विस्तृत सुनवाई नहीं हो जाती, तब तक किसी भी दंडात्मक कदम से बचना जरूरी है।

हाई कोर्ट ने इस पूरे मामले को केआईआईएफबी से जुड़ी याचिका के साथ जोड़ते हुए अगली सुनवाई की तारीख 23 जनवरी 2026 तय की है। तब तक के लिए ईडी की ओर से मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन, थॉमस इसाक और के. एम. अब्राहम के खिलाफ की जाने वाली किसी भी तरह की कार्रवाई पर रोक जारी रहेगी। इस फैसले को राज्य सरकार और वामपंथी मोर्चे के लिए बड़ी राहत के रूप में देखा जा रहा है, जबकि मसाला बॉन्ड मामले में केंद्र और राज्य के बीच कानूनी और राजनीतिक टकराव की अगली कड़ी अब हाई कोर्ट की अगली सुनवाई पर टिकी है।

अभिनेता दिलीप का पासपोर्ट जारी करने का आदेश, 2017 में जमानत की शर्त पर किया था सरेंडर

(जीएनएस)। कोच्चि। 2017 के चर्चित अभिनेत्री यौन उत्पीड़न मामले में बरी होने के बाद अभिनेता दिलीप को बड़ी राहत मिली है। एर्नाकुलम जिला एवं प्रधान सत्र न्यायालय ने दिलीप का पासपोर्ट जारी करने का आदेश दे दिया है। यह फैसला जिला एवं प्रधान सत्र न्यायालय के न्यायाधीश हनी एम. वर्गीस ने दिलीप द्वारा दायर याचिका पर सुनाया।

जानकारी के मुताबिक, दिलीप ने 13 दिसंबर को अदालत में पासपोर्ट वापस देने की मांग को लेकर याचिका दायर की थी। इस याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई के दौरान विशेष लोक अभियोजक ने आपत्ति जताते हुए कहा था कि अभियोजन पक्ष अभिनेता की बरी होने के फैसले के खिलाफ अपील दायर करने पर विचार कर रहा है। हालांकि, गुरुवार को हुई अगली सुनवाई में अभियोजन की ओर से कोई आपत्ति दर्ज नहीं कराई गई, जिसके बाद अदालत ने दिलीप के पक्ष में आदेश पारित करते हुए उनका पासपोर्ट जारी करने का निर्देश दिया। गौरतलब है कि वर्ष 2017 में अभिनेत्री के अपहरण और यौन उत्पीड़न से जुड़े मामले में गिरफ्तारी के बाद दिलीप को जमानत मिली थी। जमानत की शर्तों के तहत उन्हें अपना पासपोर्ट अदालत में सरेंडर करना पड़ा था। इसके साथ ही अदालत ने उस दौरान यह भी स्पष्ट किया था कि जरूरत पड़ने पर वे व्यवसायिक कारणों या फिल्मों के प्रमोशन के लिए विदेश यात्रा की अनुमति मांग सकते हैं। इस मामले में इससे पहले अदालत ने दिलीप समेत चार आरोपियों को संदेह का लाभ देते हुए बरी कर दिया था, जबकि अपराध में प्रत्यक्ष रूप से शामिल पाए गए छह आरोपियों को 20 साल की कठोर कैद की सजा सुनाई गई थी। दिलीप की बरी होने के बाद अब पासपोर्ट जारी करने के आदेश को उनके लिए एक अहम कानूनी राहत के रूप में देखा जा रहा है, जिससे उनके पेशेवर और निजी कार्यों में आने वाली बाधाएं दूर होंगी।

नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2063

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

एक्सप्रेस-वे पर सुरक्षित सफर सुनिश्चित हो

उस घटना की कल्पना करके भी रूह कांप जाती है, जिसमें मथुरा के निकट, मंगलवार तड़के घने कोहरे के चलते कई वाहनों के आपस में टकराने से तेरह लोग जिंदा जल गए। घने अंधेरे में बड़ी संख्या में लोग आग में झुलसे और घायल हुए। मरने वाले निर्दोष लोग अपने-अपने जरूरी कामों के लिए जल्दी पहुंचने की चाहत में रात के सफर पर निकले थे। लेकिन हालात उन्हें मौत के मुंह में ले गये। मंगलवार को अमंगल का यह सिलसिला पंजाब तक चला, जहां सुबह घने कोहरे के चलते पांच लोगों की मौत सड़क दुर्घटनाओं में हुई। बरनाला व तपामंडी में हुए दो सड़क हादसों में एक ही परिवार के तीन लोगों समेत पांच लोगों की मौत हुई। वजह वही, घने कोहरे के चलते दृश्यता में कमी और स्थिति का आकलन न कर पाने के कारण दुर्घटनाग्रस्त हो जाना। वहीं तपामंडी के व्यापारी की पत्नी व बेटी की मौत रास्ते में खड़े ट्रक से उनकी कार के टकराने से हुई। इससे पहले रविवार सुबह कोहरे के कोहराम से 66 वाहनों के टकराने से एक छात्रा समेत चार लोगों की मौत हरियाणा में भी हुई। चरखी दादरी में एक स्कूल बस व रोडवेज की बस की आमने-सामने की टक्कर में एक ग्यारहवीं की छात्रा की मौत हो गई और तीस से अधिक छात्राएं व शिक्षक, बस चालक समेत घायल हो गए। वहीं तेज रफ्तार वाले नेशनल हाईवे 152-डी पर एक के बाद एक, अनेक वाहन दृश्यता की कमी के चलते दुर्घटनाग्रस्त हो गए, जिसमें तीन युवकों की मौत हो गई और 24 से अधिक लोग घायल हो गए। निश्चय ही निर्दोष लोगों का यूं असमय काल-कवलित होना बेहद दुखद ही है। आखिर हर साल जाड़े के दिनों में धुंध या कोहरे की वजह से होने वाले हादसों के लिए हम क्यों अभिशप्त हैं? आखिर इन दुर्घटनाओं को टालने की गंभीर कोशिश सरकार, समाज व वाहन चालकों की तरफ से क्यों नहीं की जाती?

विडंबना है कि जब हमने चांद व मंगल ग्रह तक दस्तक दे दी है, तो राष्ट्रीय राजमार्गों व एक्सप्रेस-वे पर यात्रियों के जानमाल की रक्षा के लिए धुंध से मुक्ति की तकनीक क्यों नहीं लगा पा रहे हैं? निश्चय ही प्रकृति की लीला का मुकाबला कर पाना संभव नहीं, लेकिन कमोबेश दुर्घटनाओं की संख्या कम करके जान-माल का नुकसान कम करने का प्रयास तो करें। यह सजगता नागरिकों के स्तर पर भी जरूरी है। यात्रा के समय के चयन और धुंध के बीच वाहन चालन में अतिरिक्त सतर्कता की जरूरत होती है। राष्ट्रीय राजमार्ग व एक्सप्रेस-वे पर पर्याप्त रोशनी और धुंध में दृश्यता बढ़ाने के तकनीकी प्रयास किए जाएं। मौसमी बाधा के बीच दुर्घटना का एक बड़ा कारण राजमार्गों के किनारे अवैध रूप से जगह-जगह खोले गए ढाबे भी बनते हैं। दरअसल, होटल-ढाबों के पास वाहनों को अपने परिसर में खड़ा करने की जगह नहीं होती, जिसके चलते ट्रक व अन्य वाहन सड़कों में खड़े रहते हैं। जिसके चलते अक्सर तेजी से आने वाले वाहन दृश्यता की कमी से इन खड़े वाहनों से टकराकर दुर्घटना ग्रस्त हो जाते हैं। पिछले माह राजस्थान के फलोदी के निकट एक टेम्पो ट्रेवलर के सड़क के किनारे खड़े ट्रेलर से टकराने से दस महिलाओं व चार बच्चों समेत पंद्रह लोगों की मौत हुई थी। इस घटना पर स्वतः संज्ञान सुप्रीम कोर्ट ने लिया। सोमवार को सुनवाई के दौरान कोर्ट ने राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण व प्रशासन की कार्यप्रणाली पर सख्त नाराजगी दिखाई। कोर्ट ने लगातार हादसों की वजह बन रहे इन अवैध होटलों-ढाबों पर नियंत्रण हेतु पूरे देश के लिये दिशा-निर्देश जारी करने की जरूरत बतायी। कई अध्ययनों में हादसों की वजह सड़कों के डिजाइन में कमी को भी बताया गया। सवाल है कि जब देश में अच्छी-तेज सड़कों का जाल तीव्र गति से बिछाया जा रहा है तो सुरक्षित सफर सुनिश्चित करना भी तो नीति-नियंताओं की जवाबदेही बनती है? हादसों के लिए सिर्फ चालकों को जिम्मेदार नहीं बताया जा सकता। हां, इतना जरूर है कि वाहन चालकों को गति के साथ मति भी तेज रखनी होगी। यातायात नियमों का पालन करने में एक जिम्मेदार नागरिक का भी दायित्व निभाना होगा।

मोदी के ओमान दौरे का बड़ा असर, खाड़ी में रणनीतिक बढ़त हासिल कर भारत ने जमाई अपनी धाक

> “ पीएम मोदी को यह सम्मान ऐसे समय मिला है जब भारत और ओमान अपने कूटनीतिक संबंधों के 70 वर्ष पूरे कर रहे हैं। पीएम मोदी की यह यात्रा उनके तीन देशों के दौरे यानि जॉर्डन, इथियोपिया और ओमान की अंतिम कड़ी थी, लेकिन महत्व के लिहाज से शायद यह यात्रा सबसे भारी थी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को ओमान की राजधानी मस्कट में उस समय ऐतिहासिक सम्मान मिला, जब सुल्तान हैथम बिन तारिक ने उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'ऑर्डर ऑफ ओमान' से अलंकृत किया। यह केवल एक सम्मान नहीं, बल्कि भारत की बढ़ती वैश्विक हैसियत पर मुहर थी। हम आपको बता दें कि पीएम मोदी यह सम्मान पाने वाले दुनिया के उन गिने-चुने नेताओं में शामिल हो गए हैं, जिनमें महारानी एलिज़ाबेथ, नेल्सन मंडेला और जापान के सम्राट अकिहितो जैसे नाम शामिल हैं। यह सम्मान ऐसे समय मिला है जब भारत और ओमान अपने कूटनीतिक संबंधों के 70 वर्ष पूरे कर रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी की यह यात्रा उनके तीन देशों के दौरे यानि जॉर्डन, इथियोपिया और ओमान की अंतिम कड़ी थी, लेकिन महत्व के लिहाज से शायद यह यात्रा सबसे भारी थी। मस्कट पहुंचने पर प्रधानमंत्री को औपचारिक गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया, जो भारत के प्रति ओमान के सम्मान और भरोसे को साफ दर्शाता है।

इस दौरे की सबसे बड़ी उपलब्धि रही भारत-ओमान व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (CEPA), जिसने द्विपक्षीय संबंधों को एक नई ऊंचाई दी। यह समझौता इसलिए भी ऐतिहासिक है क्योंकि इसमें पहली बार भारत की पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों यानि AYUSH को औपचारिक रूप से शामिल किया गया है। ओमान ने आयुष सेवाओं और उत्पादों के लिए अपने बाजार के दरवाज़े खोल

दिए हैं, जिससे खाड़ी क्षेत्र में भारत की सॉफ्ट पावर को जबरदस्त बल मिलेगा।

इसके अलावा, दोनों देशों ने संयुक्त दृष्टि दस्तावेज़ को अपनाया और समुद्री विरासत, वैज्ञानिक अनुसंधान, कौशल विकास, कृषि, नवाचार और व्यापार जैसे क्षेत्रों में कई समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए। 'मैत्री पर्व' कार्यक्रम में प्रवासी भारतीयों और छात्रों को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने भारत को "तेज़ फैसले लेने वाला, समयबद्ध परिणाम देने वाला और वैश्विक मॉडल बनता देश" बताया। देखा जाये तो प्रधानमंत्री मोदी को मिला 'ऑर्डर ऑफ ओमान' सिर्फ एक व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है, यह उस नए भारत की अंतरराष्ट्रीय स्वीकृति है जो अब झिझकता नहीं, बल्कि शर्तें तय करता है। बीते एक दशक में मोदी सरकार ने विदेश नीति को औपचारिकताओं से निकालकर रणनीति, व्यापार और सामरिक हितों की ठोस जमीन पर उतारा है। ओमान इसका ताज़ा उदाहरण है। हम आपको बता दें कि ओमान भले ही आकार में छोटा देश हो, लेकिन उसका सामरिक महत्व विशाल है। अरब सागर और हिंद महासागर के संगम पर स्थित ओमान, हॉर्मुज जलडमरूमध्य के पास है, जहां से दुनिया के एक बड़े हिस्से का तेल व्यापार गुजरता है। ऐसे में भारत और ओमान के रिश्ते केवल व्यापारिक नहीं, बल्कि गहरे सामरिक और सुरक्षा आयाम रखते हैं।

इसके अलावा, CEPA के ज़रिये भारत ने साफ संकेत दिया है कि वह खाड़ी क्षेत्र में केवल ऊर्जा का उपभोक्ता बनकर नहीं रहना चाहता, बल्कि निवेश, स्वास्थ्य, तकनीक और नवाचार का भागीदार बनना चाहता है। आयुष को समझौते में शामिल करना भारत की सभ्यतागत ताकत का प्रदर्शन है। यह संदेश है कि भारत अब केवल दवाइयाँ नहीं, जीवनशैली भी निर्यात करेगा।

इसके अलावा, रक्षा और समुद्री सुरक्षा के मोर्चे पर ओमान भारत का भरोसेमंद साथी रहा है। भारतीय नौसेना को ओमान के बंदरगाहों तक रणनीतिक पहुंच, हिंद महासागर में भारत की निगरानी क्षमता को कई गुना बढ़ाती है। चीन जिस तरह से इस क्षेत्र में 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' रणनीति के तहत अपने पैर पसार रहा है, उसके मुकाबले भारत-ओमान साझेदारी एक सटीक और संतुलित जवाब है।

बहरहाल, प्रधानमंत्री मोदी का यह दौरा एक और संदेश देता है कि भारत अब अपनी प्रवासी भारतीय आबादी को केवल भावनात्मक पूंजी नहीं, बल्कि कूटनीतिक शक्ति मानता है। ओमान में बसे भारतीय दशकों से दोनों देशों के बीच सेतु का काम कर रहे हैं और मोदी सरकार ने इस सेतु को नीति का हिस्सा बनाया है। कुल मिलाकर, ओमान में मिला सम्मान, CEPA पर हस्ताक्षर और रणनीतिक संवाद, तीनों मिलकर यह साबित करते हैं कि भारत अब वैश्विक मंच पर अनुगामी नहीं, निर्णायक भूमिका में है। यह कूटनीति दिखावे की नहीं, परिणाम देने वाली है। और यही वजह है कि आज जब प्रधानमंत्री मोदी को सम्मान मिलता है, तो वह केवल व्यक्ति का नहीं, बल्कि भारत के आत्मविश्वास का सम्मान होता है।

प्रेरणा

धैर्य की ईंटों से बना पुल और परिवर्तन की सच्ची शक्ति

एक बार मार्टिन लूथर किंग जूनियर एक छोटे से शहर में आए थे। यह शहर मानचित्र पर भले ही छोटा था, लेकिन वहां के लोगों के मन में असंतोष, पीड़ा और सवाल बहुत बड़े थे। उनके भाषण को सुनने के लिए बड़ी संख्या में लोग आए थे। किंग ने हमेशा की तरह अहिंसा, समानता, न्याय और प्रेम की बात की। उन्होंने कहा कि बदलाव का रास्ता कठिन जरूर है, लेकिन वही रास्ता टिकाऊ होता है जो इंसानियत से होकर गुजरता है। भाषण खत्म हुआ, तालियां बजीं और लोग धीरे-धीरे अपने-अपने घरों की ओर लौटने लगे।

लेकिन भीड़ के किनारे एक युवक खड़ा रह गया। उसके चेहरे पर गहरी बेचैनी थी। आंखों में गुस्सा था और मन में निराशा। वह काफी देर तक सोचता रहा, फिर अचानक आगे बढ़कर किंग के पास आ गया। उसकी आवाज में कड़वाहट थी। उसने कहा कि लोग उसके साथ अन्याय करते हैं, उसे दबाया जाता है, उसकी बात नहीं सुनी जाती। उसने यह भी कहा कि उसे अब अहिंसा और धैर्य की बातें खोखली लगने लगी हैं। उसके मुताबिक, बिना संघर्ष, बिना क्रोध और बिना टकराव के कोई बड़ा बदलाव संभव नहीं है। उसे लगता था कि आग का जवाब आग से ही दिया जाना चाहिए।

मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने उसकी बात पूरी शांति से सुनी। उन्होंने न तो उसे टोका और न ही तुरंत कोई उत्तर दिया। कुछ क्षणों तक वे बस उसे देखते रहे, जैसे उसके भीतर चल रही उथल-पुथल को समझने की कोशिश कर रहे हों। फिर उन्होंने धीरे से कहा कि चलो, थोड़ा टहलते हैं। युवक को यह अजीब लगा, लेकिन वह उनके साथ चल पड़ा।

दोनों शहर से थोड़ा बाहर नदी के किनारे पहुंचे। नदी चौड़ी थी और उसका पानी तेज बह रहा था। वहां एक पुल का निर्माण चल रहा था, लेकिन वह अभी अधूरा था। नदी के दोनों किनारों पर लोग खड़े थे। वे एक-दूसरे को साफ देख सकते थे, हाथ हिला सकते थे, आवाज भी लगा सकते थे, लेकिन नदी के कारण वे एक-दूसरे तक पहुंच नहीं पा रहे थे। बीच में बहता पानी और अधूरा पुल उस दूरी की कहानी कह रहा था।

किंग कुछ देर तक उस दृश्य को देखते रहे। बहते पानी की आवाज, अधूरे पुल की टूटी संरचना और दोनों किनारों पर खड़े लोगों की बेबसी—सब कुछ मानो किसी गहरे सत्य की ओर इशारा कर रहा था। फिर उन्होंने युवक की ओर देखा और पूछा कि अगर तुम्हें इस नदी को पार करना हो, तो सबसे सही तरीका क्या होगा। युवक ने बिना ज्यादा सोचे कहा कि पुल को पूरा करना ही एकमात्र रास्ता है। तैरकर जाना जोखिम भरा है और पानी को कोसने से कुछ नहीं बदलेगा।

यह सुनकर किंग के चेहरे पर हल्की मुस्कान आ गई। उन्होंने कहा कि जीवन और समाज भी कुछ ऐसे ही हैं। जब हमारे और हमारी मंजिल के बीच नफरत, अन्याय और अविश्वास की नदी बह रही होती है, तो हम अक्सर गुस्से में आकर या तो उस नदी को कोसने लगते हैं या सामने वाले किनारे पर खड़े लोगों से लड़ने लगते हैं। लेकिन इससे दूरी कम नहीं होती। उल्टा, पानी और उफनने लगता है, खाई और गहरी हो जाती है।

उन्होंने समझाया कि नफरत और हिंसा कभी पुल नहीं बनातीं। वे केवल टूट-फूट लाती हैं। वे हमें यह भ्रम देती हैं कि हम मजबूत हो रहे हैं, जबकि सच यह होता है कि हम अपने ही रास्ते को और मुश्किल बना रहे होते हैं। न्याय का रास्ता धैर्य से बनता है, साहस से आगे बढ़ता है और करुणा से मजबूत होता है। धैर्य वह ईंट है जो हमें रुककर सही दिशा चुनने का मौका देती है। साहस वह शक्ति है जो हमें हर दिन, हर अपमान और हर असफलता के बाद फिर से ईंट उठाने की हिम्मत देता है। और करुणा वह सीमेंट है जो इन ईंटों को जोड़कर पुल को टिकाऊ बनाती है।

युवक चुपचाप यह सब सुनता रहा। उसकी नजरें बार-बार उस अधूरे पुल पर टिक जाती थीं। उसे अचानक एहसास हुआ कि उसका क्रोध उसे न्याय के करीब नहीं, बल्कि उससे दूर ले जा रहा था। वह जिनसे लड़ रहा था, उनसे ज्यादा वह अपने भीतर के गुस्से और अधैर्य का शिकार था। वह चाहता था कि पुल एक ही रात में बन जाए, लेकिन उसने कभी यह नहीं सोचा कि पुल ईंट-दर-ईंट, दिन-ब-दिन बनता है।

उस पल उसे समझ आया कि सच्चा परिवर्तन शोर मचाने से नहीं, बल्कि लगातार और शांत प्रयास से आता है। धैर्य कमजोरी नहीं, बल्कि लंबी लड़ाई में सबसे बड़ी ताकत है। जब वह वापस लौटा, तो उसके कदम पहले से हल्के थे। उसका गुस्सा पूरी तरह खत्म नहीं हुआ था, लेकिन अब वह उसे दिशा देने लगा था। उसने तय किया कि वह लड़ाई जरूर लड़ेगा, लेकिन नफरत के हथियार से नहीं, बल्कि धैर्य, साहस और करुणा के पुल के सहारे। यही वह पुल था, जो उसे उसकी मंजिल तक पहुंचा सकता था और दूसरों को भी साथ लेकर चल सकता था।

1971 से जुड़ी एक सैनिक की यादें

सत्रह दिसम्बर 1971 की रात, 8 बजे, पश्चिमी मोर्चे पर भारत-पाकिस्तान युद्ध में, पंद्रह दिनों तक लगभग निरंतर चली जानलेवा लड़ाई के बाद, समूचे छम्ब युद्ध क्षेत्र में अचानक गहराया सन्नाटा मुझे ब्रह्मांड में उस सर्वव्यापी अलौकिक शांति की याद दिला गया, जो ईश्वर द्वारा पृथ्वी पर जीवन के सृजन से पहले पसरा होगा। लेकिन, क्या हमने युद्ध खत्म होने की खुशी में नाच-गाना किया?अपनी बात करूं तो, मैं तो बस हैरान था कि यह सब हो क्या रहा है, ठीक वैसे ही जैसे कि कवि रॉबर्ट साउदर्न से 'ब्लेंहेम की लड़ाई' के बारे में दो किशोर पोते-पोतियों ने मासूमियत से पूछा था 'अब हमें युद्ध के बारे में बताओ, और वे एक-दूसरे से क्यों लड़े?...' और कविता इन पंक्तियों के साथ खत्म होती है... 'और सबने ड्यूक की तारीफ की जिसने यह महान लड़ाई जीती।' लेकिन आखिर इसका क्या फायदा हुआ? छोटे पर्किन ने कहा। कवि ने कहा : 'क्यों, यह मैं नहीं बता सकता लेकिन यह शानदार जीत थी'। इतिहास में देखें तो, तीनों भारत-पाकिस्तान युद्धों में भारतीय उपमहाद्वीप का यह छोटा सा हिस्सा पाकिस्तान के सैन्य योजनाकारों के लिए एक सामरिक आसक्ति बना रहा और दक्षिणी पीर पंजाल क्षेत्र पर प्रभुत्व जमाने के लिए युद्ध की शुरुआत का मुहाना एवं जम्मू क्षेत्र के लिए संभावित खतरा रहा अलबत्ता वे इसमें सफल नहीं हुए। इन प्रवृत्तियों के मद्देनज़र,द्वितीय विश्व युद्ध की नामी 10वीं इन्फैंट्री डिवीजन को छम्ब-जौड़ीयां सेक्टर में रक्षा स्थिति मजबूत करने और 1965 के युद्ध में छम्ब सेक्टर में पाकिस्तान द्वारा कब्जाए इलाके को फिर हासिल करने के उद्देश्य से तैनात किया गया था। लेकिन यहां हमारे पाकिस्तानी दुश्मनों ने 3 दिसंबर, 1971 की शाम शुरू हुए साहसिक पूर्व-आक्रमण से हमें मात दे डाली। उनका मंसूबा तभी साफ हो गया जब विभिन्न कैलिबर की लगभग 180 तोपों ने एक साथ फायरिंग शुरू कर दी, जिससे नारंगी-गुलाबी रोशनी फैल गयी, तोपों की लगातार फायरिंग की गड़गड़ाहट दूर तक सुनाई देती। लेकिन अगले पल, वह ज़बरदस्त आवाज़ हमारे चारों ओर बरसने वाले घातक गोलों के कानफाड़ धमाकों के सामने फीकी पड़ गई। तारों से भरा आसमान, धुएं और मलबे के गुबार से ढक गया। पांच दिसंबर की रात तक पाकिस्तान ने तवी नदी के पश्चिम तट का बचाव कर रही 191 इन्फैंट्री ब्रिगेड ग्रुप के ज़्यादातर भाग को लगभग निष्क्रिय कर डाला था, सिवाय 12वीं फील्ड रेजिमेंट (आर्टिलरी) के, और जी-ओ-सी ने 6 दिसंबर को अपने कमांडरों को पीछे हटने को कहा। लग रहा था कि हमारी कमांड रेडियो फ्रीक्वेंसी हैक हो गई क्योंकि उस रात तोपखाने के अनवरत हमलों ने खूनखराबे में और इजाफा कर दिया।

6 दिसंबर को लगभग 5 बजे, 191वीं ब्रिगेड ने 12वीं फील्ड रेजिमेंट द्वारा दिए कवरिंग फायर के तहत पीछे हटना शुरू किया और पौने आठ बजे तक, अलग-थलग पड़ चुकी 12वीं फील्ड की हालत देख, दुश्मन ने तवी तट पर घोड़े की नाल जैसी घेराबंदी बनाकर, हम तोपचियों को उसके तंग होते घेरे में फांसने का मौका हथिया लिया! हम हर तरह से फंस चुके थे, लेकिन किस्मत ने हमारा साथ दिया जैसे कि घेराबंदी तोड़ने की हमारी व्यूहरचना की गाथा को पश्चिमी कमान के जी-ओ-सी लेफ्टि.जन. केपी कैंडथ,ने ब्यान किया :'इस टुकड़ी (यानी 12वीं फील्ड रेजिमेंट की 'क्यू' तोपखाना टुकड़ी) की तोपें मुनावार तवी पुल को पार करने वाली सैनिकों की आखिरी संगठित टुकड़ी थीं, जिन्होंने बड़े जोश से और रणनीतिक ढंग पर अमल करते हुए, कुछ-कुछ दूरी तक पीछे हटते वक्त भी फायरिंग जारी रखी, दुश्मन की पीछा करती इन्फैंट्री के थककर रुकने तक वे प्वांइट ब्लैंक फायरिंग करती रहीं, उपरांत पुल को हमारी रक्षात्मक रणनीति के तहत 101वीं इंजीनियर फील्ड कंपनी द्वारा 6 दिसंबर, 1971 को पौने बारह बजे उड़ा दिया गया'। भीषण लड़ाई के बीच भी हास्य के पल आते हैं। जब 7 दिसंबर को हमारे खोजी पहरेदारों ने हमारे तोपखाने इलाके में एक संदिग्ध 'घुसपैठिए' को पकड़ा। लेकिन 1956 में आईएमए, देहरादून में हमारे आखिरी साथ के बाद, बख्तरबंद कोर की वर्दी में, 6 फीट लंबे उस 'घुसपैठिए' मेजर से इस तरह मिलना कितना अजीब रहा! हम दोनों ने तुरंत पहली नज़र में एक-दूजे को पहचान लिया;यह मित्र ग्रोवर पास की एक खाई में सो रहा था जब उसके टैंक सैनिकों ने 'तुरंत आगे बढ़ो' के आदेश पर कार्रवाई की, और अपने ट्रूप कमांडर को नींद पूरी करते छोड़ आगे बढ़ गए!

और आखिर में, विरासत बनने काबिल यादें। जब लगने लगा कि हमने बाजी जीत ली, तो दुश्मन ने पूर्वी किनारे पर कई छोटी-छोटी घुसपैठें करके फिर हैरान कर दिया, जिससे खतरे की घंटियां बज उठीं और हमें और पीछे हटने के आदेश मिले। सूबेदार मेजर संत राम साहब ने रूआंसी आंखों से कहा:'साहब, ऐना पीछे हट-हट के, घर वापस जा के अपना मुंह किवें दिखावांगे'! मैं जवाब ढूंढ ही रहा था, तभी वह आदेश वापस ले लिया गया, संत राम साहब खुशी से बोले : 'ऐह तां रब ने फौज दी इज्जत बचा दित्ती, साहब जी'! 14 दिसंबर सुबह पहली बार तोपखाने से स्पोर्ट-फायर की मांगों में कमी आई और दोपहर को, सबकी नज़रें एक संतरी पर पड़ीं जो संगीन की नोक पर दो पगड़ी धारी सिख ग्रामीणों को मेरे पास ला रहा था और अचानक उन्होंने 'ओह बल्ले-बल्ले' कहते हुए बांहों में भरकर मुझे ऊपर उठा लिया! हमारा पूरा तोपखाना हैरानी भरी हंसी से चहक उठा।

तभी कुछ संकुचाते हुए हवलदार क्लर्क, निर्मल सिंह रेजिमेंटल कमांड पोस्ट के बंकर से बाहर निकले, ताकि अपने उन मामाओं से मेरा सकें! गुरदासपुर से आगे लिफ्ट लेकर आने और रास्ते में हर मिलिट्री पुलिस जांच चौकी को चकमा देने की कहानी सुनाने के बाद, उन्होंने कहाः 'असीं सोचेआ ऐनी घमासान जंग लग्गी है, ते असां आपणे भांजे नूं ज़रूर मिल आईए'! हमने उन्हें शानदार लंच कराया, रम पंच पैग के साथ, और फिर अखनूर वापस भिजवा दिया।

सूबेदार मेजर संतराम साहब और हवलदार निर्मल सिंह और उनके मामा जैसे लोग प्रतीक हैं उनका, जो भारतीय सशस्त्र बलों से दिल से जुड़े हैं, जैसाकि फिलिप मेसन ने कहा हैः 'क्योंकि यह इज्जत का मामला है!' ...न कम, न ज़्यादा।

अभियान

जब अमावस्या केवल अंधकार नहीं, बल्कि दिव्य अनुकंपा का द्वार बन जाती है

हिंदू सनातन परंपरा में अमावस्या को अक्सर एक गंभीर, मौन और पितृ-स्मृति से जुड़ी तिथि के रूप में देखा जाता है। अधिकांश लोगों के मन में यह धारणा बनी रहती है कि अमावस्या केवल श्राद्ध, तर्पण और पूर्वजों के ऋण को चुकाने का दिन है। लेकिन शास्त्रों और आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाए तो अमावस्या केवल अतीत की ओर देखने की तिथि नहीं है, बल्कि यह वर्तमान को शुद्ध करने और भविष्य को आलोकित करने का एक अत्यंत शक्तिशाली अवसर भी है। वर्ष 2025 की अंतिम अमावस्या, पौष अमावस्या, 19 दिसंबर को पड़ रही है और यह तिथि अपने भीतर गहरी आध्यात्मिक ऊर्जा समेटे हुए है।

अमावस्या की रात जब आकाश में चंद्रमा दिखाई नहीं देता, तब प्रतीक रूप में मनुष्य के भीतर के अहंकार, अज्ञान और मानसिक कोलाहल को भी शांत होने का अवसर मिलता है। यही कारण है कि ऋषियों ने इस तिथि को साधना, उपासना और आत्म-शुद्धि के लिए सर्वोत्तम माना। इस दिन केवल पितरों का ही नहीं, बल्कि अनेक देवी-देवताओं का आशीर्वाद भी सहज रूप से प्राप्त होता है, बशर्ते भक्त श्रद्धा और सही भाव से उनकी आराधना करे।

अमावस्या पर भगवान शिव की उपासना को अत्यंत फलदायी माना गया है। शिव को संहार और करुणा दोनों का देवता कहा गया है। जब चंद्रमा लुप्त होता है, तब शिव तत्व सबसे अधिक सक्रिय माना जाता है। इस दिन शिवलिंग पर जल, दूध और बेलपत्र अर्पित करने से मन का बोझ हल्का होता है, अनावश्यक भय दूर होता है और जीवन में जमा हुआ मानसिक विष बाहर निकलता है। मान्यता है कि अमावस्या की शिव पूजा से पितृ दोष भी शांत होता है, क्योंकि शिव स्वयं पितरों के भी अधिपति माने गए हैं। जो लोग जीवन में बार-बार बाधाओं, अनिश्चितता और भीतर की बेचैनी से जूझ रहे हों, उनके लिए अमावस्या की शिव साधना किसी औषधि से कम नहीं।

शिव के साथ ही माता पार्वती की पूजा का भी इस दिन विशेष महत्व है। पार्वती शक्ति, करुणा और गृहस्थ जीवन की संतुलन शक्ति का प्रतीक हैं। अमावस्या के दिन माता की आराधना करने से वैवाहिक जीवन में चल रहे तनाव कम होते हैं, संबंधों में मधुरता आती है और सौभाग्य में वृद्धि होती है। जिन घरों में आपसी संवाद टूट गया हो या भावनात्मक दूरी बढ़ गई हो, वहाँ अमावस्या पर की गई पार्वती उपासना

धीरे-धीरे प्रेम और समझ का सेतु बना देती है।

पौष अमावस्या पर भगवान विष्णु की पूजा भी विशेष फल देती है। विष्णु पालन के देवता हैं और अमावस्या के दिन उनकी आराधना करने से जीवन में किए गए अनजाने पाप कर्मों का क्षय होता है। इस दिन 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जप या विष्णु सहस्रनाम का पाठ करने से मन स्थिर होता है और जीवन को सही दिशा मिलने लगती है। यह उपासना केवल भौतिक सुखों के लिए नहीं, बल्कि अंतःकरण की शुद्धि और मोक्ष मार्ग को प्रशस्त करने के लिए मानी गई है।

जहाँ विष्णु हैं, वहाँ लक्ष्मी स्वतः आती हैं। अमावस्या पर मां लक्ष्मी की पूजा धन, स्थिरता और संतुलन का प्रतीक मानी जाती है। यह दिन विशेष रूप से उन लोगों के लिए शुभ होता है, जो आर्थिक अस्थिरता, कर्ज या निरंतर धन रुकावट से परेशान हैं। दीपक जलाकर लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करना, खीर या सफेद मिठाई का भोग लगाना और मन में कृतज्ञता का भाव रखना—ये छोटे से उपाय धीरे-धीरे घर से दरिद्रता का भाव मिटाने लगते हैं।

अमावस्या को हनुमान जी की पूजा का भी विशेष महत्व है। यह तिथि नकारात्मक शक्तियों, भय और अदृश्य बाधाओं से रक्षा करने वाली मानी जाती है। हनुमान जी बल, भक्ति और निष्ठा के प्रतीक हैं। अमावस्या के दिन हनुमान चालीसा या सुंदरकांड का पाठ करने से मन का डर टूटता है और आत्मविश्वास जागृत होता है। जो लोग शत्रु बाधा, रोग या मानसिक भय से जूझ रहे हों, उनके लिए यह उपासना विशेष संबल देती है।

पौष मास को सूर्य देव का महीना कहा गया है और अमावस्या की सुबह सूर्य को अर्घ्य देना अत्यंत शुभ माना गया है। पवित्र जल से स्नान कर सूर्य को जल अर्पित करने से शरीर में ऊर्जा का संचार होता है, स्वास्थ्य में सुधार आता है और आत्मबल बढ़ता है। सूर्य आत्मा के कारक हैं, इसलिए उनकी उपासना से व्यक्ति भीतर से मजबूत बनता है।

शनि देव की पूजा का संबंध भी अमावस्या से गहराई से जुड़ा है। धार्मिक मान्यता है कि शनि देव का जन्म अमावस्या तिथि को हुआ था। इस दिन सरसों के तेल का दीपक जलाना, नीले पुष्प अर्पित करना और शनि मंत्र का जप करना साढ़ेसाती और ढैय्या के प्रभाव को कम करता है। यह पूजा जीवन में अनुशासन, धैर्य और कर्म के प्रति जागरूकता सिखाती है।

अमावस्या का सबसे कोमल और भावनात्मक पक्ष पितरों से जुड़ा है। इस दिन दक्षिण दिशा की ओर मुख करके तर्पण करना, काले तिल और जल अर्पित करना, अन्न और वस्त्र का दान करना अत्यंत पुण्यकारी माना गया है। पीपल वृक्ष की पूजा विशेष महत्व रखती है, क्योंकि उसमें देवताओं और पितरों दोनों का वास माना गया है। पीपल की जड़ में जल अर्पित कर दीपक जलाने से पितरों की आत्मा तृप्त होती है और उनका आशीर्वाद पूरे परिवार पर बना रहता है। अंततः अमावस्या हमें यह सिखाती है कि अंधकार का अर्थ नकारात्मकता नहीं, बल्कि भीतर झांकने का अवसर है। जब चंद्रमा दिखाई नहीं देता, तब मनुष्य अपने भीतर के प्रकाश को पहचान सकता है। यही कारण है कि अमावस्या केवल पितरों का स्मरण नहीं, बल्कि देवी-देवताओं की कृपा, आत्म-शुद्धि और जीवन को नई दिशा देने की एक पवित्र तिथि बन जाती है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA

मोरबी में प्रभारी मंत्री श्री त्रिकमभाई छांगा की अध्यक्षता में वाइब्रेंट कॉन्फ्रेंस आयोजित हुई

- 2470 करोड़ रुपए के नए पूंजी निवेश से मोरबी के विकास की रफ्तार और तेज बनेगी
- 50 एमओयू में मौके पर सांकेतिक रूप से पाँच उद्यमियों ने एमओयू किए
- वाइब्रेंट गुजरात समिट के आयोजन से विश्व के उद्यमी गुजरात की ओर आकर्षित हुए
- मोरबी के उद्योगकार, उद्यमी तथा श्रमिक मेहनती और सरकार की औद्योगिक नीति के परिणामस्वरूप मोरबी का विकास हुआ : प्रभारी मंत्री श्री त्रिकमभाई छांगा
- ऊर्जा राज्य मंत्री श्री कौशिकभाई वेकरिया की प्रेरक उपस्थिति

(जीएनएस)। मोरबी : मोरबी में केशव बैंक्वेट हॉल में जिला स्तरीय वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस प्रभारी मंत्री श्री त्रिकमभाई छांगा की अध्यक्षता में आयोजित हुई। इस वाइब्रेंट कॉन्फ्रेंस में जिला उद्योग केन्द्र तथा 50 कंपनियों के बीच 2470 करोड़ रुपए के एमओयू हुए, जिनमें मौके पर सांकेतिक रूप से पाँच उद्यमियों ने एमओयू किए। इस अवसर पर मंत्री, महानुभावों तथा अधिकारियों ने उद्यमियों को शुभकामनाएँ दीं। गुजरात में आयोजित होने वाली वाइब्रेंट समिट देश के अन्य राज्यों के लिए अध्ययन का विषय है, तब राज्य सरकार द्वारा गुजरात के जिलों में तथा रीजनल स्तर पर वाइब्रेंट कॉन्फ्रेंस आयोजित किए जाने से स्थानीय स्तर पर रहे उद्योगों को अधिक गति मिलेगी और स्थानीय स्तर पर अनेक लोगों को रोजगार मिलेगा। जिला प्रभारी तथा उच्च एवं तकनीकी शिक्षा राज्य मंत्री श्री त्रिकमभाई छांगा ने वाइब्रेंट गुजरात के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के उम्दा विचार की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि वाइब्रेंट गुजरात जैसे आयोजनों से विश्व के उद्योगकार-उद्यमी गुजरात की ओर मुड़े हैं। निवेश केवल कागज पर नहीं, बल्कि जमीन पर उतर रहा है। इसी कारण गुजरात की धरती उद्योग एवं रोजगार देने में अग्रसर है। राज्य सरकार ने औद्योगिक प्रगति में आड़े आने वाले अवरोधों को दूरकर उद्योगों को विकास का पूरक बनाया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन से हम पर्यावरण संरक्षण के साथ औद्योगिक विकास कर रहे हैं। उन्होंने मोरबी के उद्यमियों के उत्साह की प्रशंसा करते हुए कहा कि विकसित भारत के सपने को साकार करने में ऐसा ही उत्साह जरूरी है। उन्होंने विशेष उल्लेख किया कि मोरबी में विभिन्न उद्योगों के विकास के लिए सरकार ने पिछले दो वर्ष में 1200 से अधिक उद्योगों को 460 करोड़ रुपए से अधिक राशि की सहायता दी है।

उन्होंने कहा कि घड़ी तथा सिरामिक उद्योग की तरह खिलौना उद्योग भी मोरबी में सफल हो रहा है। यहाँ के उद्योगकार बहुत ही साहसी एवं श्रमिक बहुत मेहनती होने के कारण मोरबी का विकास वैश्विक पहचान बना है। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि प्रशासन तथा सरकार उद्यमियों की समस्याओं का निराकरण करने को कटिबद्ध है।

ऊर्जा राज्य मंत्री श्री कौशिकभाई वेकरिया ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा गुजरात में शुरू की गई वाइब्रेंट समिट आज मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने जारी रखी है, जिससे गुजरात के उद्योगकारों को तो लाभ होगा ही, स्थानीय लोगों को रोजगार भी मिलेगा। मोरबी उद्योग नगरी है। यहाँ के सिरामिक, घड़ी आदि उद्योग वैश्विक पहचान बने हैं। जिला स्तरीय वाइब्रेंट कॉन्फ्रेंस उद्योगकारों से एमओयू के साथ उद्योगकारों को परेशान करने वाली समस्याओं के निवारण का माध्यम भी बनेगी। राजकोट में आयोजित होने वाले कार्यक्रम में अधिक से अधिक उद्योगकारों को भाग लेने तथा मोरबी जिले के अधिक से अधिक एमओयू हों; इसके लिए उन्होंने सरकार की ओर से लोगों को आमंत्रण दिया।

विधायक श्री दुर्लभजीभाई देथरिया ने कहा कि गुजरात की अनेक क्षेत्रों में प्रगति हुई है, जिसमें वाइब्रेंट गुजरात का योगदान अमूल्य है। मोरबी का औद्योगिक क्षेत्र में विशेष स्थान है। ऐसे में जिले में अधिक से अधिक निवेश आए; इस दिशा में कार्य हो रहा है। उद्योगों को वांछित सुविधाएँ देने को सरकार तत्पर है। ऐसे में उन्होंने वैश्विक स्तर पर मोरबी के उद्योगों को अधिक से अधिक संज्ञान में लिए जाने की शुभकामनाएँ दीं।

जिला कलेक्टर श्री के. बी. झवेरी ने महानुभावों तथा उद्योगकारों का स्वागत करते हुए कहा कि मोरबी के उद्योगकार साहस से भरे हुए हैं। लगभग तीन हजार कारखानों से अनेक लोगों को रोजगार मिल रहा है। वाइब्रेंट समिट में समग्र गुजरात में मोरबी शीर्ष पर रहे; वह क्षमता यहाँ विद्यमान है। मोरबी में सिरामिक, कोयला, पेपर मिल, घड़ी, नमक आदि उद्योग अधिक से अधिक फलें-फूलें; इसके लिए प्रशासन द्वारा पूर्ण सहयोग दिए जाने का उन्होंने आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि मोरबी जिले में हजारों श्रमिक रोजगार प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने उद्योगों में दुर्घटना निवारण मशीन रखरखाव में गुणवत्तापूर्ण सामग्री के उपयोग की उद्योगपतियों से अपील की।

चैम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष श्री जयंतीभाई पटेल ने मोरबी में आयोजित कॉन्फ्रेंस में सबका स्वागत करते हुए कहा कि मोरबी के औद्योगिक क्षेत्र की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति हुई है। मोरबी के विकास में उद्यमी, श्रमिक, राज्य सरकार, स्थानीय पदाधिकारी तथा प्रशासन का बहुत सहयोग रहा है। उन्होंने कहा कि इस वाइब्रेंट कॉन्फ्रेंस में उद्योगकारों के पास एमओयू के साथ ही उनकी समस्याएँ प्रस्तुत करने का अवसर है। विधायक श्री प्रकाश वरमोरा ने प्रासंगिक संबोधन में वाइब्रेंट गुजरात पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि गुजरात सरकार की औद्योगिक नीति एवं विकास के विजन से राज्य निरंतर प्रगति कर रहा है। राज्य तथा देश के विकास में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन से हमारा जीवन स्तर ऊँचा आया है। उन्होंने पॉजिटिविटी तथा क्रिएटिविटी के साथ आगे बढ़कर, अच्छी आय के साथ अच्छा स्वास्थ्य एवं अच्छा-लंबा जीवन जीने के लिए निरंतर एक्टिव रहने का अनुरोध किया। इसके साथ ही उन्होंने उद्योगपतियों से स्किल, नॉलेज तथा अभ्यास बढ़ाने का आह्वान किया। अपर उद्योग आयुक्त श्री आर. एन. डोडिया ने प्रासंगिक प्रवचन करते हुए प्रेजेंटेशन दिया और मोरबी जिले में निवेश के अवसरों, राजकोट में आयोजित होने वाली वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस की विस्तृत जानकारी देकर उद्योगपतियों को उसका अधिकतम लाभ लेने का मार्गदर्शन दिया। इस अवसर पर प्रभारी मंत्री श्री त्रिकमभाई छांगा तथा महानुभावों के करकमलों से लाभार्थी उद्योगकारों को सहायता का वितरण हुआ। कार्यक्रम के आरंभ में महानुभावों ने वोकल फॉर लोकल प्रदर्शनी का उद्घाटन कर स्टॉलधारकों से वार्तालाप किया। यहाँ सिरामिक पेपर कप डिश, फैशन डिजाइनिंग, इलेक्ट्रिक्स पार्ट्स सहित 18 स्टॉल लगाए गए थे। दूसरे सत्र में जीएसटी, जेम, इंसेंटिव लेबर कानून के बारे में विशेषज्ञों का परिसंवाद आयोजित हुआ। इस अवसर पर उपस्थितों ने वाइब्रेंट गुजरात की वीडियो क्लिप देखी। कार्यक्रम में जिला विकास अधिकारी श्री शैलेषचंद्र भट्ट, मनपा आयुक्त श्री स्वप्निल खरे, जिला उद्योग केन्द्र के महाप्रबंधक श्री एस. बी. पारेजिया, पूर्व मंत्री श्री ब्रिजेशभाई मेरजा, अग्रणी, उद्योगकार, उद्योग गृहों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

मोरबी में आयोजित वाइब्रेंट कॉन्फ्रेंस में 2470 करोड़ रुपए के 50 एमओयू हुए। इनमें से 1024 करोड़ रुपए के पाँच एमओयू मौके पर सांकेतिक रूप से किए गए। मौके पर किए गए पाँच एमओयू में 500 करोड़ रुपए के निवेश के साथ सिमेंट प्रोजेक्ट, 400 करोड़ रुपए का रिन्यूएबल एनर्जी प्रोजेक्ट, 100 करोड़ रुपए के निवेश के साथ फाइबर सेक्टर में एमओयू शामिल हैं।

पत्थरों में सांस भरने वाला साधक विदा हुआ, स्मारकों में अमर रहेगा राम वी सुतार का युग

(जीएनएस)। मुंबई। मूर्तिकला को जीवन साधना मानने वाले, बापू को प्रेरणा और भारत को अपनी कर्मभूमि मानने वाले शतायु शिल्पकार राम वी सुतार अब चिरनिद्रा में लीन हो गए हैं। गुरुवार की सुबह जब उन्होंने इस संसार से विदाई ली, तब उनकी उम्र 100 वर्ष थी, लेकिन उनकी सक्रियता, सृजनशीलता और जिजीविषा आज के युवाओं को भी चुनौती देती थी। कुछ वर्ष पहले एक विदेशी मीडिया को दिए इंटरव्यू में उन्होंने कहा था कि मूर्तिकला चित्रकला जैसी नहीं होती, इसमें कठोर शारीरिक मेहनत लगती है, लेकिन उन्हें लगता है कि वे अभी लंबे समय तक काम कर सकते हैं। यह कथन केवल शब्द नहीं था, बल्कि उनके जीवन का सत्य था, क्योंकि निधन से महज कुछ दिन पहले तक वे अपने शिल्प में रमे हुए थे। लगभग बीस दिन पहले ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गोवा में भगवान श्रीराम की जिस भव्य प्रतिमा का अनावरण किया था, उसकी संकल्पना और निर्माण राम वी सुतार ने ही किया था। यानी जीवन के अंतिम क्षणों तक उन्होंने पत्थर, मिट्टी और धातु से संवाद नहीं छोड़ा। राम वी सुतार का

जीवन केवल एक कलाकार की कहानी नहीं, बल्कि साधना, संघर्ष और राष्ट्रबोध से भरी एक तपस्वी यात्रा थी। उनका जन्म 1925 में उत्तरी महाराष्ट्र के एक छोटे से गांव में हुआ। पिता बढ़ई और लोहार का काम करते थे। बचपन में सुविधाएं सीमित थीं, लेकिन कल्पनाएं असीम। कच्चे घर की दीवारों पर गोबर से भित्तिचित्र बनाना उनका पहला अभ्यास था। स्कूल की स्लेट पर उकेरी गई एक हिंदू देवी की आकृति ने उन्हें पहली पहचान दिलाई, जब उसी चित्र के लिए मुंबई की एक कला प्रतियोगिता में उन्हें पुरस्कार मिला। दोस्तों की आर्थिक मदद से वे देश के प्रतिष्ठित जेजे स्कूल ऑफ आर्ट्स पहुंचे, जहां उनकी प्रतिभा को दिशा मिली। एलोरा और अजंता की गुफाओं में प्राचीन मूर्तियों के संरक्षण का काम करते हुए उन्होंने भारतीय शिल्प परंपरा की गहराई को आत्मसात किया।

उनके जीवन का पहला बड़ा मोड़ तब आया, जब उन्होंने उत्तरी भारत में एक बांध के पास 45 फीट ऊंची नदी देवी की प्रतिमा बनाने का काम मात्र दस हजार रुपये में स्वीकार कर लिया। लोगों को भरोसा नहीं था कि यह दुबला-पतला कलाकार इतना विशाल काम कर पाएगा। लेकिन राम सुतार अपनी पत्नी और छोटे बेटे के साथ उस दूरदराज इलाके में चले गए और करीब 18 महीनों तक कंक्रीट और पत्थर से जूझते रहे। इसी संघर्ष से जन्मी मध्य प्रदेश के गांधी सागर बांध पर स्थापित 'माता चंबल' की प्रतिमा ने उन्हें देशव्यापी पहचान दिलाई। चंबल नदी, जिसे अक्सर बीहड़ों और भय के प्रतीक के रूप में देखा जाता था, राम सुतार के हाथों एक करुणामयी मां में बदल गई। युवती के रूप में गढ़ी गई चंबल माता, जिनके हाथ में जल से भरा दिव्य घड़ा है और दोनों ओर प्रतीक रूप में मध्य प्रदेश और राजस्थान रूपी दो बालक खड़े हैं, यह प्रतिमा केवल कला नहीं थी, बल्कि दर्शन थी। एक ही चट्टान से तराशी गई 45 फीट ऊंची यह आकृति आज भी बताती है कि राम सुतार ने प्रकृति, संस्कृति और प्रतीक को किस गहराई से समझा।

उनकी कला की दुनिया महापुरुषों से आबाद रही। महात्मा गांधी, डॉ. भीमराव अंबेडकर, सरदार वल्लभभाई पटेल, दीनदयाल उपाध्याय, छत्रपति शिवाजी महाराज – ये सभी उनकी मूर्तियों में केवल चेहरे नहीं, बल्कि विचार बनकर खड़े दिखाई देते हैं। संसद परिसर में स्थापित गांधी की ध्यानमग्न प्रतिमा हो या घोड़े पर सवार शिवाजी महाराज की ओजस्वी आकृति, हर जगह उन्होंने देह से पहले विचार को उकेरा। अयोध्या में कुबेर टीला पर स्थापित कांसे की जटायु प्रतिमा भी उनके ही हाथों की कृति है। लेकिन उनकी रचनात्मक यात्रा में सबसे गहरी छाप महात्मा गांधी की रही। गांधी उनके लिए केवल एक ऐतिहासिक पुरुष नहीं, बल्कि नैतिक ऊर्जा का स्रोत थे। राम सुतार ने गांधी की प्रतिमाएं भारत के लगभग 450 शहरों में बनाई और कई देशों में भी स्थापित कीं। यह उनकी कला की नहीं, बल्कि गांधीवादी विचारों की वैश्विक यात्रा की कहानी है।

राम वी सुतार ने अपने सौ वर्षों के जीवन में 400 से अधिक स्मारकों और प्रतिमाओं का निर्माण किया। 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' के रूप में सरदार पटेल की दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा ने भारत की पहचान को वैश्विक स्तर पर नई ऊंचाई दी। इस परियोजना ने उन्हें एक बार फिर सिद्ध कर दिया कि उम्र केवल संख्या होती है, साधना और संकल्प हों तो शिल्प अमर हो जाता है।

उनके निधन के बाद महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से अनुरोध किया कि इस महान शिल्पकार का अंतिम संस्कार राजकीय सम्मान के साथ किया जाए। उत्तर प्रदेश सरकार ने इसे तुरंत स्वीकार किया और नोएडा में उनके पार्थिव शरीर का राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया जाएगा। मुख्यमंत्री फडणवीस ने स्वयं उनके पुत्र से फोन पर बात कर शोक संवेदना प्रकट की।

कला के क्षेत्र में उनके अतुलनीय योगदान के लिए राम वी सुतार को 1999 में पद्म श्री और 2016 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। 2024 का महाराष्ट्र भूषण पुरस्कार भी उनके नाम घोषित किया गया। लेकिन इन सम्मानों से कहीं बड़ा सम्मान वह अमरता है, जो उन्हें उनकी कृतियों ने दी है।

राम वी सुतार अब हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी उंगलियों से तराशे गए पत्थर, धातु और मिट्टी आज भी सांस लेते हैं। वे बापू को मानने वाले शिल्पकार थे, जिन्होंने मूर्तियों के जरिए राष्ट्र की आत्मा को आकार दिया। उनका जाना एक युग का अंत है, लेकिन उनके स्मारक आने वाली पीढ़ियों को बताते रहेंगे कि एक साधक कैसे पत्थर में भी जीवन खोज लेता है।

20 दिसंबर 2025 को आदरज मोटी–विजापुर रेल खंड पर स्पीड ट्रायल,सभी से रेल पटरी से सुरक्षित दूरी बनाए रखने की अपील

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मण्डल पर आदरज मोटी–विजापुर गेज परिवर्तित परियोजना के अंतर्गत आदरज मोटी–विजापुर सेक्शन में नई परिवर्तित ब्रॉडगेज रेलवे लाइन (किमी 6/4 से किमी 45/1) पर दिनांक 20 दिसंबर 2025 को दोपहर 12.00 बजे से 14.00 बजे के दौरान अधिकतम 135 किमी प्रति घंटे की गति से लाइट इंजन का स्पीड ट्रायल किया जाएगा।

स्पीड ट्रायल रेलवे की एक अनिवार्य तकनीकी प्रक्रिया है, जो रेल परिचालन प्रारंभ करने से पूर्व ट्रैक की गुणवत्ता, सुरक्षा एवं स्थिरता की जांच के लिए किया जाता है। इस दौरान ट्रैक पर विभागीय ट्रेनें, मापन यंत्र तथा तकनीकी टीमें कार्यरत रहेंगी।

आम जनता, मजदूरों, किसानों एवं स्थानीय निवासियों से विशेष अनुरोध है कि वे रेलवे ट्रैक के समीप न जाएँ, किसी भी स्थिति में ट्रैक पार न करें तथा बच्चों एवं पशुओं को रेल लाइन से दूर रखें।

यह नई रेल लाइन क्षेत्र की जनता को बेहतर रेल कनेक्टिविटी उपलब्ध कराने के साथ-साथ क्षेत्रीय विकास को भी नया आयाम प्रदान करेगी।

अहिंसा और करुणा के संदेश के साथ 21 दिसंबर को दादरा पधारेंगे प.पू. श्रीमद् विजय प्रबोधचंद्र सुरेश्वरजी महाराज

(जीएनएस)। दादरा। जैन समाज के परम श्रद्धेय संत, जीव-दया, करुणा और अहिंसा के महान उपासक 93 वर्षीय प.पू. श्रीमद् विजय प्रबोधचंद्र सुरेश्वरजी महाराज के पावन आगमन को लेकर दादरा क्षेत्र में इन दिनों विशेष आध्यात्मिक वातावरण बना हुआ है। समाज के हर वर्ग में उनके स्वागत को लेकर गहरी श्रद्धा, भक्ति और उत्साह देखने को मिल रहा है। गुरुवर 21 दिसंबर को सूरत से वापी होते हुए दादरा पधारेंगे। उनके आगमन की सूचना मिलते ही न केवल जैन समाज, बल्कि अन्य समाजों में भी हर्ष और उल्लास की लहर दौड़ गई है। श्रद्धालु बड़ी संख्या में गुरुवर के दर्शन और आशीर्वाद के लिए उत्सुक हैं और उनके पावन चरणों के स्वागत की तैयारियों में जुटे हुए हैं। गुरुवर के दादरा आगमन के बाद धार्मिक आयोजनों की एक विशेष श्रृंखला प्रारंभ होगी। 22 दिसंबर को रत्नलीला आराधना भवन परिसर में नवनिर्मित जैन उपाश्रय का भव्य उद्घाटन प.पू. श्रीमद् विजय प्रबोधचंद्र सुरेश्वरजी महाराज के करकमलों से संपन्न होगा। यह अवसर जैन समाज के लिए अत्यंत गौरवपूर्ण और ऐतिहासिक माना जा रहा है। उपाश्रय के उद्घाटन समारोह में बड़ी संख्या में साधु-साध्वियां, समाजजन और श्रद्धालुओं के शामिल होने की संभावना है। आयोजन को लेकर समाज में विशेष तैयारियां की जा रही हैं और इसे भक्ति एवं अनुशासन के साथ संपन्न करने का संकल्प लिया गया है। इसके पश्चात 23 दिसंबर को महा-भव्य पूजन का आयोजन किया जाएगा, जिसमें विशेष धार्मिक अनुष्ठान, सामूहिक आराधना और आध्यात्मिक कार्यक्रम होंगे। इस महा-पूजन में आसपास के क्षेत्रों से भी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना है। आयोजन को लेकर समाज में काफी उत्साह है और सभी वर्ग अपनी-अपनी जिम्मेदारियों के साथ आयोजन को सफल बनाने में जुटे हुए हैं। गुरुवर के पावन आगमन और आगामी धार्मिक आयोजनों को ध्यान में रखते हुए जिला प्रशासन और ग्राम पंचायत द्वारा भी व्यापक तैयारियां की जा रही हैं। क्षेत्र में सफाई एवं स्वच्छता, यातायात व्यवस्था, सुरक्षा, शांति और अनुशासन को लेकर विशेष सतर्कता बरती जा रही है, ताकि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो और सभी कार्यक्रम सुचारु रूप से सम्पन्न हो सकें।

वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (वीजीआरसी) कच्छ-सौराष्ट्र अंतर्गत 19 से 21 दिसंबर, 2025 के दौरान पाँच जिलों में जिला स्तरीय कार्यक्रमों का आयोजन

पोरबंदर, देवभूमि द्वारका, भावनगर, बोटाद तथा सुरेन्द्रनगर में विकास एवं निवेश के नए अवसर

(जीएनएस)। गांधीनगर : वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (वीजीआरसी) कच्छ-सौराष्ट्र अंतर्गत राज्य के विभिन्न जिलों में उद्योग, निवेश एवं रोजगार सृजन को प्रोत्साहन देने के लिए जिला स्तरीय कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। इसके अंतर्गत पोरबंदर, देवभूमि द्वारका, भावनगर, बोटाद तथा सुरेन्द्रनगर जिलों विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। पोरबंदर जिले में वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (वीजीआरसी) कच्छ-सौराष्ट्र अंतर्गत 19 दिसंबर, 2025 को विभिन्न कार्यक्रम आरंभ होंगे और दूसरे दिन 20 दिसंबर को भी सेमिनार का आयोजन किया गया है तथा 21 दिसंबर तक प्रदर्शनी आयोजित होगी। ये सभी कार्यक्रम ताजवाला हॉल तथा नटवर सिंहजी क्लब ग्राउंड में आयोजित किए गए हैं; जिसमें ब्लू बायो-इकोनॉमी विकास का रोडमैप, एग्री तथा फूड प्रोसेसिंग कॉन्क्लेव और महिला सशक्तिकरण के लिए 'सशक्त नारी मेला' तथा 'प्रदर्शनी' आयोजित होंगे। इस अवसर पर प्रभारी मंत्री श्री कुँवरजीभाई बावळिया सहित केबिनेट मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया, केन्द्रीय मंत्री श्री मनसुखभाई मांडविया, अपर उद्योग आयुक्त (एक्सटेंशन) श्री आर. एन. डोडिया (आईएएस) विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। देवभूमि द्वारका जिले में जाम खंभाळिया में 19 दिसंबर, 2025 को दोपहर 3 बजे आयोजित कार्यक्रम में प्रभारी मंत्री श्री कुँवरजीभाई बावळिया उपस्थित रहकर प्रासंगिक संबोधन देंगे और उद्योग आयुक्त श्री पी. स्वरूप (आईएएस) विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। ये एक दिवसीय जिला स्तरीय कार्यक्रम स्थानीय उद्योगों को मजबूत बनाते हैं। भावनगर में इस्कॉन क्लब एंड रिसोर्ट में 19 दिसंबर, 2025 को सुबह 10.30 बजे आयोजित कार्यक्रम में प्रभारी सचिव तथा प्रभारी मंत्री श्री कौशिकभाई वेकरिया सहित जियोलॉजी एंड माइनिंग के आयुक्त डॉ. धवल पटेल (आईएएस) विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। वे वीजीआरसी के विषय में प्रस्तुति देकर खनिज क्षेत्र, औद्योगिक विकास तथा राज्य की नीतियों पर मार्गदर्शन देंगे, जो उद्योगकारों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। बोटाद जिले में 19 दिसंबर, 2025 को सुबह 10 बजे आयोजित एक दिवसीय कार्यक्रम में प्रभारी मंत्री श्रीमती रीवाबा जाडेजा सहित गुजरात औद्योगिक विकास निगम (जीआईडीसी) की उपाध्यक्ष तथा प्रबंध निदेशक सुश्री प्रवीणा डी. के. की उपस्थिति रहेगी। वे औद्योगिक विकास, औद्योगिक इन्फ्रास्ट्रक्चर तथा निवेश अवसरों पर मार्गदर्शन देंगी, जिसके जरिये स्थानीय एमएसएमई तथा स्टार्टअप्स को नई दिशा मिलेगी। सुरेन्द्रनगर जिले में पंडित दीनदयाल उपाध्याय टाउन हॉल में 19 दिसंबर, 2025 को सुबह 10.30 बजे आयोजित होने वाले कार्यक्रम में प्रभारी मंत्री श्रीमती दर्शनाबेन वाघेला प्रसंगोचित संबोधन करेंगी और कुटीर एवं ग्रामोद्योग सचिव तथा आयुक्त सुश्री आर्द्रा अग्रवाल (आईएएस) द्वारा रीजनल कॉन्फ्रेंस पर विशेष प्रस्तुति की जाएगी। यहाँ स्टार्टअप, इनोवेशन, एमएसएमई तथा सरकारी योजनाओं के बारे में मार्गदर्शन दिया जाएगा। इन सभी जिला स्तरीय कार्यक्रमों में सफल उद्योगकारों के अनुभव संबंधी संवाद, एमओयू साइनिंग, चेक वितरण, स्टार्टअप तथा एमएसएमई के लिए उपयोगी परिसंवादों और प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया है। वीजीआरसी अंतर्गत आयोजित हो रही यह पहल सरकार, उद्योगों तथा निवेशकों के बीच संवाद मजबूत बनाकर 'विकसित गुजरात@2047' के विजन को साकार करने में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

सोना वायदा में 619 रुपये और चांदी वायदा में 1290 रुपये की गिरावटः क्रूड ऑयल वायदा 22 रुपये फिसला

कमोडिटी वायदाओं में 21252.04 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 69917.37 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर

सोना-चांदी के वायदाओं में 17740.71 करोड़ रुपये का हुआ कारोबारः बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 33185 पॉइंट के स्तर पर

(जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 91181.97 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 21252.04 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 69917.37 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का दिसंबर वायदा 33185 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 1149.24 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 17740.71 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 134736 रुपये के भाव पर खूलकर, 134770 रुपये के दिन के उच्च और 134166 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 134894 रुपये के पिछले बंद के सामने 619 रुपये या 0.46 फीसदी लुढ़ककर 134275 रुपये प्रति 10 ग्राम बोला गया। गोल्ड-गिनी दिसंबर वायदा 361 रुपये या 0.33 फीसदी घटकर 107512 रुपये प्रति 8 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। गोल्ड-पेटल दिसंबर वायदा 24 रुपये या 0.18 फीसदी घटकर 13466 रुपये प्रति 1 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। सोना-मिनी जनवरी वायदा 133117 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 133167 रुपये और नीचे में 132582 रुपये पर पहुंचकर, 416 रुपये या 0.31 फीसदी घटकर 132699 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। गोल्ड-टेन दिसंबर वायदा प्रति 10 ग्राम 133313 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 133420 रुपये और नीचे में 132908 रुपये पर पहुंचकर, 133373 रुपये के पिछले बंद के सामने 320 रुपये या 0.24 फीसदी घटकर 133053 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा सत्र के आरंभ में 206526 रुपये के भाव पर खूलकर, 207060 रुपये के दिन के उच्च और 205381 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 207435 रुपये के पिछले बंद के सामने 1290 रुपये या 0.62 फीसदी की गिरावट के साथ 206145 रुपये प्रति

किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा 1155 रुपये या 0.56 फीसदी औंधकर 206735 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 1071 रुपये या 0.52 फीसदी गिरकर 206789 रुपये प्रति किलो हुआ।

मेटल वर्ग में 1554.11 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा दिसंबर वायदा 1.8 रुपये या 0.16 फीसदी घटकर 1111.55 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि जस्ता दिसंबर वायदा 1.85 रुपये या 0.61 फीसदी की गिरावट के साथ 302.4 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। इसके सामने एल्यूमीनियम दिसंबर वायदा 45 पैसे या 0.16 फीसदी की नरमी के साथ 281.1 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा दिसंबर वायदा 15 पैसे या 0.08 फीसदी बढ़कर 180.8 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 1948.65 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल दिसंबर वायदा 5092 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 5108 रुपये और नीचे में 5054 रुपये पर पहुंचकर, 22 रुपये या 0.43 फीसदी घटकर 5059 रुपये प्रति बैरल के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी दिसंबर वायदा 23 रुपये या 0.45 फीसदी गिरकर 5057 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा नैचुरल गैस दिसंबर वायदा 368 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 371 रुपये और नीचे में 365.5 रुपये पर पहुंचकर, 362.9 रुपये के पिछले बंद के सामने 7.6 रुपये या 2.09 फीसदी बढ़कर 370.5 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि नैचुरल गैस-मिनी दिसंबर वायदा 7.5 रुपये या 2.07 फीसदी की तेजी के संग 370.3 रुपये प्रति एमएमबीटीयू हुआ।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल दिसंबर वायदा सत्र के आरंभ में 960 रुपये के भाव पर खूलकर, 23.1 रुपये या 2.4 फीसदी की गिरावट के साथ 938.5 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 7465.92 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 10274.79 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 1246.58 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 82.43 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 14.92 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 210.18 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 467.53 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 1472.18 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 16995 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 77918 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 22156 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 348729 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 37547 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 16985 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 41381 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 113531 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 26041 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 41898 लोट के स्तर पर था। इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स दिसंबर वायदा सत्र के आरंभ में 33301 पॉइंट पर खूलकर, 33301 के उच्च और 33181 के नीचले स्तर को छूकर, 152 पॉइंट घटकर 33185 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल जनवरी 5100 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 3.7 रुपये की गिरावट के साथ 180.3 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस दिसंबर 370 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 2.3 रुपये की बढ़त के साथ 11.7 रुपये हुआ।

सोना दिसंबर 135000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 339.5 रुपये की गिरावट के साथ 1713 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी दिसंबर 209000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 1296.5 रुपये की गिरावट के साथ 3849 रुपये हुआ। तांबा दिसंबर 1120 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 1.76 रुपये की गिरावट के साथ 10.43 रुपये हुआ। जस्ता दिसंबर 310 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 1.03 रुपये की गिरावट के साथ 2 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल जनवरी 5100 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 5.5 रुपये की बढ़त के साथ 192.8 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस दिसंबर 370 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 4.7 रुपये की गिरावट के साथ 11.9 रुपये हुआ।

सोना दिसंबर 130000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 89 रुपये की बढ़त के साथ 549 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी दिसंबर 205000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 334 रुपये की बढ़त के साथ 4993 रुपये हुआ। तांबा दिसंबर 1100 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 44 पैसे के सुधार के साथ 8.57 रुपये हुआ। जस्ता दिसंबर 295 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 42 पैसे के सुधार के साथ 1.6 रुपये हुआ।

अटल नेतृत्व, अविरत विकास

आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना – मुख्यमंत्री अमृतम (AB PMJAY-MA) अंतर्गत गुजरात में 1 करोड़ से अधिक परिवारों को समाविष्ट किया गया

AB PMJAY-MA अंतर्गत लाभार्थियों को दावों का भुगतान करने में गुजरात प्रथम स्थान पर

ऑल इंडिया सर्विसेज (एआईएस) तथा राज्य सरकार के अधिकारियों, पेंशनभोगियों को AB PMJAY-MA योजना का लाभ लेने के लिए 'कर्मयोगी स्वस्थ सुरक्षा योजना', जी कैटेगरी अंतर्गत लगभग 6.40 लाख लाभार्थियों का पंजीकरण

(जीएनएस)। गांधीनगर, 18 दिसंबर : गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री तथा भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरातियों के स्वास्थ्य में गुणवत्तापूर्ण सुधार लाने के उद्देश्य से 'स्वस्थ गुजरात, समृद्ध गुजरात' का मंत्र दिया था। आज मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात ने सुनिश्चित किया है कि स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ सुदूरवर्ती मानव तक पहुँचे और कोई व्यक्ति चिकित्सा सुविधाओं से वंचित न रहे। समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को चिकित्सा उपचार के लिए आर्थिक सहायता देने वाली केन्द्र सरकार की सबसे बड़ी योजना है आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना, जिसे गुजरात सरकार की मुख्यमंत्री अमृतम योजना के साथ जोड़ा गया है। संयुक्त रूप से आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना – मुख्यमंत्री अमृतम (AB PMJAY-MA) अंतर्गत राज्य के 1,20,14,556 परिवारों को समाविष्ट किया गया है। इसके अलावा; जुलाई-2023 में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में AB PMJAY-MA अंतर्गत राज्य सरकार द्वारा प्रति परिवार वार्षिक बीमा राशि 5 लाख रुपए से बढ़ाकर 10 लाख रुपए की गई है। यह बात दर्शाती है कि गुजरात ने स्वास्थ्य सुविधाओं को अधिक मजबूत तथा सुलभ बनाया है, जो राज्य में सुशासन का उत्तम उदाहरण है। प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के क्रियान्वयन को लेकर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल कहते हैं, "प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना अंतर्गत आयुष्मान कार्ड देकर गरीब एवं मध्यम वर्ग को स्वास्थ्य सुरक्षा कवच प्रदान किया है। प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में आज समाज को निरामय रखने के लिए हमने गुजरात में योग से आयुष्मान तक की परियोजनाएँ लागू की हैं। प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना अंतर्गत हमने 5 लाख रुपए की आर्थिक सहायता बढ़ाकर 10 लाख रुपए की है। इस योजना से गरीब एवं सुदूरवर्ती क्षेत्रों में भी लोगों को गंभीर बीमारियों में निःशुल्क उपचार मिल रहा है। आज सरकारी अस्पतालों में भी उच्च स्तरीय स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध हैं। स्वस्थ समाज तथा स्वस्थ गुजरात के माध्यम से प्रधानमंत्री के विकसित भारत@2047 के लक्ष्य को हम साकार करेंगे।"

AB PMJAY-MA अंतर्गत आर्थिक सहायता 5 लाख रुपए से बढ़ाकर 10 लाख रुपए होने से प्रीमियम राशि में वृद्धि

आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना – मुख्यमंत्री अमृतम (AB PMJAY-MA) अंतर्गत जब 5 लाख रुपए की आर्थिक सहायता दी जाती थी, तब 1 जुलाई 2021 से 10 जुलाई 2022 तक प्रति परिवार प्रीमियम राशि 2177.10 रुपए थी और उस समयावधि के दौरान कुल वित्तीय खर्च 1681.20 करोड़ रुपए हुआ था। इसके बाद 11 जुलाई, 2022 से 10 जुलाई, 2023 के दौरान प्रीमियम राशि 1492 रुपए थी, जिस दौरान कुल वित्तीय खर्च 1363.52 करोड़ रुपए हुआ था। 10 जुलाई 2023 को राज्य सरकार द्वारा योजनांतर्गत देय आर्थिक सहायता 5 लाख रुपए से बढ़ाकर 10 लाख रुपए की गई, जिससे प्रीमियम राशि बढ़कर प्रति परिवार 3708 रुपए हुई है। कुल वित्तीय खर्च की बात करें, तो 11 जुलाई 2023 से 10 जुलाई 2024 के दौरान कुल वित्तीय खर्च 2676.26 करोड़ रुपए, जबकि 11 जुलाई 2024 से 10 जुलाई 2025 के दौरान कुल वित्तीय खर्च 3210.03 करोड़ रुपए हुआ है। AB PMJAY-MA योजना अंतर्गत राज्य में कुल 2090 अस्पताल एम्पैनल्ड हैं, जिनमें 1132 सरकारी तथा 958 निजी अस्पताल हैं। इस योजनांतर्गत नवंबर 2025 तक कुल 2299 प्रोसीजरों तथा 50 एसआरएस प्रोसीजरों को समाविष्ट किया गया है। उल्लेखनीय है कि इस योजना अंतर्गत लाभार्थियों के दावों का भुगतान करने में गुजरात राज्य प्रथम स्थान पर है।

66 वर्षीय फारुकभाई को हृदय रोग के उपचार के लिए AB PMJAY-MA अंतर्गत मिली 5,24,040 रुपए की आर्थिक सहायता

अहमदाबाद निवासी 66 वर्षीय फारुकभाई खिमाणी एक जनरल स्टोर चलाते हैं, जिनकी आर्थिक स्थिति बहुत साधारण है। फारुकभाई को हृदय में दर्द होने के बाद यूएन मेहता इंस्टीट्यूट ऑफ कार्डियोलॉजी एंड रिसर्च सेंटर लाया गया। उनकी ईसीजी रिपोर्ट कराई गई, जिससे कोरोनरी आर्टरी डिसीज का निदान हुआ। उन्हें हृदय की सर्जरी कराने की सलाह दी गई थी, जिसके लिए बहुत खर्च होने की संभावना थी। इस समय उनकी सहायता में आई प्रधानमंत्री जन आरोग्य – मा अमृतम योजना (PMJAY-MA), जिसके तहत उन्हें राज्य सरकार द्वारा 5,24,040 रुपए की आर्थिक सहायता दी गई। मई 2025 में PMJAY-MA योजना अंतर्गत सहायता से फारुकभाई की कोरोनरी एंजियोग्राफी तथा उसके बाद कोरोनरी आर्टरी बाईपास ग्राफ्टिंग (सीएबीजी) की सर्जरी की गई। इसके बाद हाल ही में यानी दिसंबर 2025 में ही उन्हें साँस लेने में दिक्कत होने पर यूएन मेहता अस्पताल में फिर से भर्ती कराया गया और वहाँ उनकी सीआरटी-पी इम्प्लांट की सफल सर्जरी की गई है। हाल में उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा है और वे राहत का अनुभव कर रहे हैं। फारुकभाई कहते हैं, "प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना मेरे और मुझ जैसे मरीजों के लिए बहुत सहायक हो रही है। राज्य के गरीब तथा मध्यम वर्ग के लोगों को श्रेष्ठ चिकित्सा सुविधाओं के लिए सरकार ने यह योजना लागू की, जिसके लिए प्रधानमंत्री तथा मुख्यमंत्री का बहुत धन्यवाद !"

राज्य सरकार के सभी कर्मयोगियों तथा पेंशनभोगियों के लिए 'कर्मयोगी स्वस्थ सुरक्षा योजना'

गुजरात सरकार द्वारा मई 2025 में राज्य के सभी अधिकारियों-कर्मचारियों तथा पेंशनभोगियों के लिए गुजरात कर्मयोगी स्वस्थ सुरक्षा योजना शुरू की गई है, जिसके तहत राज्य के फिक्स पे कर्मचारियों के अलावा ऑल इंडिया सर्विसेज (एआईएस) के अधिकारियों व पेंशनभोगियों तथा राज्य सरकार के अधिकारियों, कर्मचारियों, पेंशनभोगियों और उनके आश्रित परिजनों को भी AB PMJAY-MA अंतर्गत कैशलेस चिकित्सा उपचार का लाभ दिया जाता है। गुजरात कर्मयोगी स्वस्थ योजना के तहत राज्य सरकार के सभी कर्मयोगियों तथा पेंशनभोगियों को जी सीरिज का AB-PMJAY-MA कार्ड दिया जाता है। जी कैटेगरी अंतर्गत कुल लगभग 6.40 लाख लाभार्थी हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इस वर्ष राज्य सरकार के विभागों द्वारा बजट अंतर्गत किए गए खर्च की सर्वग्राही समीक्षा बैठक आयोजित की

मुख्यमंत्री का विभागों को और अधिक सुदृढ़ आयोजन द्वारा निर्धारित प्रक्रिया समय पर पूर्ण करने का सुझाव

अर्बन डेवलपमेंट द्वारा गठित क्वॉलिटी सेल की तरह अन्य विभागों को भी क्वॉलिटी एश्योरेंस के लिए कदम उठाने के दिशा-निर्देश

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गुरुवार को गांधीनगर में उच्च स्तरीय बैठक आयोजित कर इस वर्ष 2025-26 के बजट अंतर्गत राज्य सरकार के सभी विभागों द्वारा नवंबर 2025 तक किए गए खर्च की समीक्षा की। श्री पटेल ने इस समीक्षा के दौरान विभागों द्वारा 30 नवंबर 2025 तक बजट अंतर्गत किए गए खर्च की तुलनात्मक समीक्षा करते हुए पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष के बजटीय प्रावधान के समक्ष खर्च में हुई वृद्धि पर संतोष व्यक्त किया।

इतना ही नहीं; उन्होंने सभी विभागों को उनका आयोजन अधिक सुदृढ़ करके निर्धारित प्रक्रिया समय पर पूर्ण हो एवं आगामी वर्ष की पहली तिमाही में खर्च में अधिक सुधार हो; इसके लिए भी दिशा-निर्देश दिए।

इस बैठक में वित्त मंत्री श्री कनुभाई देसाई, परिवहन तथा वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री श्री प्रवीणभाई माळी, मुख्यमंत्री के मुख्य सलाहकार डॉ. हसमुख अढिया, मुख्य सचिव श्री एम. के. दास, मुख्यमंत्री के सलाहकार श्री एस. एस. राठौड़, सभी विभागों के अपर मुख्य सचिव, प्रधान सचिव और सचिव सहभागी हुए।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने बजट आवंटन के समक्ष राज्य सरकार के विभागों द्वारा हुए खर्च की समीक्षा कर आवश्यक मार्गदर्शन देने के लिए शुरू किए गए उपक्रम में आयोजित पूर्व की बैठक में हुए सुझावों के संदर्भ में खर्च की गुणवत्ता सुधारने की दिशा में विभागों द्वारा उठाए गए कदमों की सर्वग्राही समीक्षा भी की।

उन्होंने विशेषकर इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स के लिए सिस्टमैटिक टेस्टिंग तथा क्वॉलिटी मॉनिटरिंग करने का सुझाव देते हुए दिशा-निर्देश दिए कि यदि ऐसे प्रोजेक्ट्स में कोई भी विसंगति ध्यान में आए, तो उस पर कड़े कदम उठाए जाएँ।

उन्होंने जोड़ा कि शहरी विकास विभाग द्वारा जिस प्रकार क्वॉलिटी सेल बनाया गया है, उसी प्रकार अन्य विभाग भी गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाएँ।

मुख्यमंत्री ने इस बात पर बल दिया कि व्यक्तिगत लाभार्थियों को सहायता प्रदान करने वाली सभी योजनाएँ समय पर लागू की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि छात्रवृत्ति तथा अन्य सहायता, वृद्धावस्था पेंशन और विधवा सहायता पेंशन वास्तव में पात्रता रखने वाले वास्तविक लाभार्थियों को समय पर सहायता-लाभ मिलें।

उन्होंने हिमायत की कि सम्बद्ध विभाग ऐसी योजनाओं का सुचारु क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के लिए अपने पास उपलब्ध डेटा का उपयोग करे। उन्होंने निर्देश दिया कि केन्द्र पुरस्कृत योजनाओं के प्रावधानों के समक्ष समय पर खर्च करने पर ध्यान केन्द्रित किया जाए और उसके बाद के आनुषांगिक कार्य पूर्ण कर भारत सरकार की ओर से अधिकतम फंड प्राप्त करने का जरूरी फॉलोअप लिया जाए।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सम्बद्ध विभागों के वरिष्ठ सचिवों को वास्तविक लाभार्थी तक लाभ पहुँचे; इस प्रकार कार्य करने और जो प्रोजेक्ट प्लानिंग स्टेज पर हो, उसे तेजी से पूर्ण कर सच्चे अर्थ में क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए।

वित्त विभाग के प्रधान सचिव ने इस समीक्षा बैठक में उपस्थित सभी का आभार व्यक्त करते हुए आश्वासन दिया कि वित्त विभाग सहित सभी विभाग गुणवत्तायुक्त तथा समय पर खर्च सुनिश्चित करने के सघन प्रयास करेंगे।

पश्चिम रेलवे चलायेगी साबरमती और शकूर बस्ती (दिल्ली) के बीच क्रिसमस स्पेशल ट्रेन

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा क्रिसमस त्यौहार के मद्देनजर यात्रियों की बढ़ती हुई मांग को ध्यान में रखते हुए साबरमती और शकूर बस्ती (दिल्ली) के बीच विशेष किराये पर स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया है। इस ट्रेन का विवरण निम्ननानुसार है:

ट्रेन संख्या 09497/09498 साबरमती-शकूर बस्ती (दिल्ली) स्पेशल (4 फेरे)

ट्रेन संख्या 09497 साबरमती-शकूर बस्ती स्पेशल 22 और 24 दिसंबर 2025 को साबरमती से 22.55 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 15.15 बजे शकूर बस्ती पहुंचेगी। इसी तरह ट्रेन संख्या 09498 शकूर बस्ती–साबरमती स्पेशल 23 और 25 दिसंबर 2025 को शकूर बस्ती से 21.00 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 12.20 बजे साबरमती पहुंचेगी। मार्ग में दोनों दिशाओं में यह ट्रेन महेसाणा, पालनपुर, आबूरोड, मारवाड़ जं., अजमेर, जयपुर, अलवर, रेवाड़ी, गुडगाँव एवं दिल्ली कैंट स्टेशनों पर रुकेगी। इस ट्रेन में सभी कोच एसी 3-टियर (हमसफर) श्रेणी के रहेंगे।

ट्रेन संख्या 09497 की बुकिंग 19 दिसंबर 2025 से सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, समय और संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

गांधीधाम-केएसआर बैंगलुरु एक्सप्रेस और जोधपुर-केएसआर बैंगलुरु एक्सप्रेस ट्रेनों के नंबरो में परिवर्तन

(जीएनएस)। यात्रियों की सुविधा बढ़ाने एवं यात्रा समय में कमी लाने के उद्देश्य से रेल प्रशासन द्वारा गांधीधाम-केएसआर बैंगलुरु एक्सप्रेस और जोधपुर-केएसआर बैंगलुरु एक्सप्रेस ट्रेनों की गति बढ़ाकर सुपरफास्ट एक्सप्रेस श्रेणी में उन्नत करने का निर्णय लिया गया है। साथ ही, इन ट्रेनों के ट्रेन नंबरों में भी संशोधन किया गया है। विवरण निम्नानुसार है:

- दिनांक 24.02.2026 से ट्रेन संख्या 16505 20685 गांधीधाम – केएसआर बेंगलुरु एक्सप्रेस के रूप में चलेगी।
- दिनांक 21.02.2026 से ट्रेन संख्या 16506 20686 केएसआर बेंगलुरु – गांधीधाम एक्सप्रेस के रूप में चलेगी।
- दिनांक 26.02.2026 से ट्रेन संख्या 16507 20693 जोधपुर – केएसआर बेंगलुरु एक्सप्रेस के रूप में चलेगी।
- दिनांक 23.02.2026 से ट्रेन संख्या 16508 20694 केएसआर बेंगलुरु – जोधपुर एक्सप्रेस के रूप में चलेगी।

सुपरफास्ट एक्सप्रेस श्रेणी में उन्नयन के फलस्वरूप ट्रेनों की गति एवं समय-सारिणी में सुधार होगा, जिससे यात्रियों को तेज एवं बेहतर रेल सेवा का लाभ मिलेगा।

यात्रियों से अनुरोध है कि यात्रा की योजना बनाते समय संशोधित ट्रेन नंबरों का ध्यान रखें। ट्रेनों के परिचालन समय, ठहराव और संरचना से सम्बंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

भारतीय स्टेट बैंक द्वारा अंतर विद्यालयीन काव्य प्रतियोगिता 'अटल काव्यांजलि' का आयोजन

(जीएनएस)। भारतीय स्टेट बैंक, आंचलिक कार्यालय, सूरत द्वारा पूर्व प्रधानमंत्री और भारत रत्न कवि अटल बिहारी वाजपेयी की जन्मशती के उपलक्ष्य में सूरत महानगर के विद्यालयों के बीच दिनांक 18 दिसंबर 2025 को एक भव्य काव्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम विद्या कुंज इंग्लिश मीडियम हायर सेकेंड्री स्कूल में संपन्न हुआ, जिसमें 9-10 वीं कक्षा के 64 तथा 11-12 वीं कक्षा के लगभग 82 छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया जिसमें दिव्याङ्ग 82 छात्र-छात्राएँ भी शामिल थे।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारतीय स्टेट बैंक, स्थानीय प्रधान कार्यालय, गांधीनगर के उप महाप्रबंधक एवं मंडल विकास अधिकारी श्री विक्रम झा थे। अपने उद्बोधन में श्री झा ने कहा कि हम जनता के पैसों की ही रक्षा नहीं करते, अपितु समय-समय पर भारत की सांस्कृतिक धरोहरों की रक्षा का दायित्व भी लेते हैं। आज का कार्यक्रम इसी दिशा में एक कड़ी है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सूरत एसबीआई आंचलिक कार्यालय के उप महाप्रबंधक श्री राजेश कुमार ने बच्चों को वैदिक गणित की प्रासंगिकता और उसके महत्व से परिचित कराया और कहा कि ये हमारी धरोहर हैं। क्षेत्रीय प्रबंधक श्री विकास कुमार ने कहा कि भारतीय स्टेट बैंक विद्यार्थियों के हर संभव सहयोग हेतु सदैव तत्पर है।

विद्या कुंज इंग्लिश मीडियम स्कूल के निदेशक श्री महेशभाई पटेल ने कहा कि माननीय अटल बिहारी वाजपेयी प्रखर राष्ट्र चिंतक और महान कवि थे। उनकी जन्मशती पर ऐसे सुरुचिपूर्ण कार्यक्रम का अपने विद्यालय में आयोजन कराना हमारा सौभाग्य है। कार्यक्रम के संयोजक एवं एसबीआई के मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री संजीव पाण्डेय ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारतीय स्टेट बैंक समाज के प्रति अपने दायित्वों के निर्वहन हेतु ऐसे कार्यक्रम निरंतर आयोजित करता रहेगा।

अगले सत्र में श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी की कविताओं पर आधारित काव्य-पाठ प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया और प्रतिभागियों को राष्ट्रीयता के यज्ञ में समर्पित होने की प्रेरणा दी गई। प्रतिभागियों ने अटल बिहारी वाजपेयी जी की विविध कविताओं का भावपूर्ण पाठ कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। निर्णायक के रूप में बैंक के सेवानिवृत सहायक महाप्रबंधक(राजभाषा) श्री ओम प्रकाश तिवारी, गांधीनगर से पधारी एसबीआई की मुख्य प्रबंधक(राजभाषा) सुश्री प्रमेधा पाण्डेय, यूको बैंक के राजभाषा अधिकारी श्री शिवम उपाध्याय तथा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की राजभाषा अधिकारी सुश्री रिंकी मुआनिया थीं। कार्यक्रम के अंत में सभी विजेताओं को अतिथियों के कर कमलों से पुरस्कृत किया गया। विद्या कुंज इंग्लिश मीडियम स्कूल की प्रिंसिपल सुश्री रीना गज्जर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

पश्चिम रेलवे बांद्रा टर्मिनस एवं जयपुर के बीच चलाएगी स्पेशल ट्रेन

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा तथा उनकी बढ़ती यात्रा मांग को ध्यान में रखते हुए बांद्रा टर्मिनस एवं जयपुर स्टेशनों के बीच विशेष किराये पर एक स्पेशल ट्रेन चलाई जाएगी। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इस ट्रेन का विवरण इस प्रकार है:

ट्रेन संख्या 09704/09703 बांद्रा टर्मिनस – जयपुर स्पेशल [02 फेरे]

ट्रेन संख्या 09704 बांद्रा टर्मिनस – जयपुर स्पेशल शुक्रवार, 26 दिसंबर, 2025 को बांद्रा टर्मिनस से 10:15 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 07:30 बजे जयपुर पहुंचेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09703 जयपुर – बांद्रा टर्मिनस स्पेशल गुरुवार, 25 दिसंबर, 2025 को जयपुर से 08:10 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 07:25 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुंचेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, वापी, वलसाड, सूरत, वडोदरा, रतलाम, विक्रमगढ़ आलोट, भवानी मंडी, रामगंज मंडी, कोटा, सवाई माधोपुर एवं दुर्गापुरा स्टेशनों पर ठहरेगी। इस ट्रेन में फर्स्ट एसी, एसी 2-टियर, एसी 3-टियर, स्लीपर क्लास तथा जनरल सेकेंड क्लास के कोच होंगे।

ट्रेन संख्या 09704 की बुकिंग 20 दिसम्बर, 2025 से सभी पीआरएस काउंटरों एवं आईआरसीटीसी की वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, समय एवं संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

फियो ने भारत के निर्यात विकास के लिए भारत-ओमान सीईपीए का रणनीतिक मील के पत्थर के रूप में स्वागत किया

(जीएनएस)। नई दिल्ली, 18 दिसंबर, 2025: फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गनाइजेशन्स (फियो), जो भारतीय निर्यातकों का सर्वोच्च निकाय है, ने भारत-ओमान व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (सीईपीए) पर हस्ताक्षर का खाड़ी क्षेत्र के साथ भारत के व्यापार और आर्थिक जुड़ाव में एक प्रमुख मील के पत्थर के रूप में गर्मजोशी से स्वागत किया है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और महामहिम सुल्तान हैथम बिन तारिक के दूरदर्शी नेतृत्व में संपन्न तथा माननीय केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल और महामहिम कैस बिन मोहम्मद अल यूसुफ द्वारा हस्ताक्षरित, यह समझौता द्विपक्षीय आर्थिक एकीकरण को गहरा करने और दीर्घकालिक व्यापार अवसरों का विस्तार करने की साझा प्रतिबद्धता को दर्शाता है। फियो अध्यक्ष श्री एस सी रल्हन ने समझौते पर टिप्पणी करते हुए कहा कि भारत-ओमान सीईपीए एक परिवर्तनकारी व्यापार समझौता है जो वस्तुओं और सेवाओं में भारत की निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता को मजबूत करता है, पेशेवर गतिशीलता को बढ़ाता है और समावेशी और रोजगार-आधारित विकास का समर्थन करता है। सीईपीए भारतीय निर्यात के लिए अभूतपूर्व बाजार पहुंच सुनिश्चित करता है, जिसमें ओमान की 98.08 प्रतिशत टैरिफ लाइनों पर शून्य-शुल्क पहुंच है, जो मूल्य के हिसाब से भारत के निर्यात का 99.38 प्रतिशत कवर करता है। यह समझौता लगभग सार्वभौमिक शुल्क-मुक्त पहुंच भारतीय वस्तुओं की प्रतिस्पर्धात्मकता को महत्वपूर्ण रूप से बनाएगा और कपड़ा और परिधान, चमड़ा और जूते, रत्न और आभूषण, इंजीनियरिंग उत्पाद, प्लास्टिक, फर्नीचर, कृषि और खाद्य उत्पाद, फार्मास्यूटिकल्स, चिकित्सा उपकरण, ऑटोमोबाइल और खेल के सामान जैसे प्रमुख श्रम-गहन क्षेत्रों को लाभ पहुंचाएगा। श्री रल्हन ने कहा कि इस समझौते से रोजगार सृजित होने और देश भर में एमएसएमई, कारीगरों, महिला-नेतृत्व वाले उद्यमों और कृषि उत्पादकों को मजबूती से समर्थन मिलने की उम्मीद है। फियो प्रमुख ने कहा कि ओमान की रणनीतिक स्थिति इसे खाड़ी और अफ्रीका के लिए एक महत्वपूर्ण प्रवेश द्वार बनाती है और सीईपीए भारतीय निर्यातकों को क्षेत्रीय मूल्य श्रृंखलाओं में अधिक प्रभावी ढंग से एकीकृत होने, बाजारों में विविधता लाने और भारत के निर्यात पदचिह्न का विस्तार करने में सक्षम बनाएगा। द्विपक्षीय व्यापार पहले ही 10 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक हो चुका है, यह समझौता वस्तु व्यापार में त्वरित विकास के लिए एक मजबूत मंच प्रदान करता है। सीईपीए सेवाओं में महत्वाकांक्षी और दूरदर्शी प्रतिबद्धताएं भी देता है, जिसमें IT और कंप्यूटर से संबंधित सेवाओं, व्यावसायिक और पेशेवर सेवाओं, आरएंडडी, शिक्षा, स्वास्थ्य और ऑडियो-विजुअल सेवाओं सहित 127 उप-क्षेत्र शामिल हैं, जो भारतीय सेवा प्रदाताओं के लिए उच्च-मूल्य के अवसर खोलते हैं। श्री रल्हन ने कहा कि भारतीय पेशेवरों के लिए बेहतर गतिशीलता प्रावधान, जिसमें इंट्रा-कॉर्पोरेट ट्रांसफर, संविदात्मक सेवा आपूर्तिकर्ताओं, व्यावसायिक आगंतुकों और स्वतंत्र पेशेवरों के लिए बेहतर पहुंच और लंबे समय तक रहने की अवधि शामिल है, भारत के सेवा निर्यात और रोज़गार सृजन को और मजबूत करेगा। यिो अध्यक्ष ने दोहराया कि इसके अलावा, यह समझौता प्रमुख सेवा क्षेत्रों में भारतीय कंपनियों द्वारा 100 प्रतिशत एफडीआई की सुविधा प्रदान करता है, पारंपरिक चिकित्सा पर पहली बार व्यापक प्रतिबद्धता पेश करता है, जो भारत के आयुष और कल्याण क्षेत्रों के लिए नए रास्ते खोलता है और महत्वपूर्ण व्यापार-सुविधा उपाय प्रदान करता है। इनमें फार्मास्युटिकल उत्पादों के लिए तेज़ अनुमोदन, वैश्विक नियामक प्रमाणपत्रों की स्वीकृति, हलाल प्रमाणन की पारस्परिक मान्यता, जैविक उत्पादों के लिए भारत के एनपीओपी प्रमाणन की स्वीकृति और मानकों और अनुरूपता मूल्यांकन पर बढ़ा हुआ सहयोग शामिल है, जो गैर-टैरिफ बाधाओं को दूर करने में मदद करता है। फियो प्रमुख ने विश्वास व्यक्त किया कि भारत-ओमान सीईपीए निर्यात को बढ़ावा देने, आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूत करने, रोज़गार पैदा करने और दोनों देशों के बीच दीर्घकालिक आर्थिक साझेदारी को गहरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

पश्चिम रेलवे का वसई रोड एवं भायंदर स्टेशनों के बीच 19/20 दिसम्बर, 2025 की मध्यरात्रि को रात्रिकालीन ब्लॉक

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा रेलपथ, सिगनलिंग प्रणाली तथा ऊपरी उपस्करों के रख-रखाव हेतु शुक्रवार/शनिवार की मध्यरात्रि अर्थात 19/20 दिसम्बर, 2025 को वसई रोड एवं भायंदर स्टेशनों के बीच अप एवं डाउन फास्ट लाइनों पर 05.15 घंटे का जम्बो ब्लॉक लिया जाएगा।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, यह ब्लॉक भायंदर एवं वसई रोड स्टेशनों के बीच अप फास्ट लाइन पर 23:30 बजे से 03:00 बजे तक, जबकि डाउन फास्ट लाइन पर 01:15 बजे से 04:45 बजे तक रहेगा। ब्लॉक अवधि के दौरान विरार और भायंदर/बोरीवली स्टेशनों के बीच फास्ट लाइन की सभी ट्रेनें स्लो लाइन पर चलाई जाएंगी।